स्वामिनारायण प्रकाश

सदस्यता शुल्क रु. 60/-
सितम्बर, 2022

मंदिर का अमृत कुंभ उठाया जाता है
सत्पुरुष के वरद करकमलों से...

प्रमुखस्वामी महाराज के विशाल मंदिर-निर्माण कार्य की एक संक्षिप्त चित्रकथा...

आणंद में परम पूज्य महंतस्वामी महाराज की निश्रा में जन्माष्टमी उत्सव का भक्ति उत्सव

गुरुहरि महंतस्वामी महाराज 15 अगस्त को अहमदाबाद से रवाना हुए और चरोतर के आणंद पहुंचे। यहां भी श्रद्धालु उनकी उपस्थिति में समीपदर्शन-सत्संग-उत्सव का दिव्य लाभ उठा रहे हैं। हाल ही में 19 अगस्त को महंतस्वामी महाराज की उपस्थिति में हजारों भक्तों ने जन्माष्टमी पर्व हर्षोल्लास और भक्ति के साथ मनाया।

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयते ॥

गुणातीतोऽक्षरं ब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमः।
जनो जानन्निदं सत्यं, मुच्यते भवबन्धनात्॥

स्वामिनारायण प्रकाश

वर्ष : 40, अंक : 9, सितम्बर, 2022

संस्थापक : ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामीजी महाराज
सम्पादक : साधु स्वयंप्रकाशदास
प्रकाशक : स्वामिनारायण अक्षरपीठ,
शाहीबाग, अहमदाबाद - 380004.

यह पत्रिका प्रतिमास 10 दिनांक को प्रकाशित होती है।

शुल्क : वार्षिक सदस्यता शुल्क : रू. 60/–
यह पत्रिका नियमित रूप से डाक द्वारा प्राप्त करने के लिए शुल्क मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट 'स्वामिनारायण अक्षरपीठ' के पक्ष में प्रकाशक के पते पर भेजें। किसी भी मास में सदस्य बन सकते हैं।

सम्पादन विषयक पत्रव्यवहार :
prakash@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' संपादन कार्यालय,
स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद - 380004.

सदस्यता विषयक पत्रव्यवहारः
magazines@in.baps.org
'प्रकाश–पत्रिका' सदस्यता कार्यालय,
स्वामिनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद - 380004.

website :
www.baps.org
magazines.baps.org

मंदिरों की निराली सृष्टि के विश्वकर्मा प्रमुखस्वामीजी महाराज

सनातन हिंदू धर्म दुनिया का एक ऐसा धर्म है जो सदियों से कई आक्रमणों के बावजूद आज तक जीवित है। विचारक सनातन धर्म की इस लंबी उम्र के पीछे तीन गौरवशाली स्तंभों के योगदान की ओर इशारा करते हैं: शास्त्र, संत और मंदिर। शास्त्रों और संतों की नींव पर खड़े मंदिर हजारों वर्षों से सनातन धर्म का झंडा फहराते रहे हैं।

मंदिर दुनिया में एक अद्वितीय धार्मिक स्थापत्य कला हैं। मंदिर के प्रत्येक भाग पर प्राचीन ऋषियों द्वारा जितना चिंतन हुआ है उतना विश्व के किसी अन्य धार्मिक भवन निर्माण में नहीं हुआ है। मंदिर के आधार पर रखी ब्रह्मशिला से लेकर मंदिर के शीर्ष पर रखे कलश और धजदंड तक, शास्त्रों ने हर अंग पर कितनी गहराई से विचार किया है! हजारों वर्षों से चली आ रही मंदिरों की परंपरा और विदेशी आक्रमणों या शासन के कारण मंदिर की गरिमा भंग हो गई। लेकिन 18वीं शताब्दी के अंत में, भगवान श्रीस्वामिनारायण ने उपासना प्रवर्तन के लिए मंदिर-निर्माण की लौ को फिर से जला दिया। भगवान श्रीस्वामिनारायण के बाद, उन परंपरा में ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज ने बी.ए.पी.एस. मंदिरों की एक शृंखला बनाई। फिर पिछले 200 वर्षों के इतिहास में, मंदिरों के निर्माण का एक महान युग रचनेवाले महापुरुष सनातन हिंदू धर्म को मिले - ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज। भारत और पृथ्वी के सभी पांच महाद्वीपों में 1200 से अधिक मंदिरों का निर्माण करके, प्रमुखस्वामी महाराज ने सनातन हिंदू धर्म के सार्वभौमिक मूल्यों को दुनिया भर में फैलाया।

स्वामिनारायण प्रकाश का यह और आने वाला अंक प्रमुखस्वामी महाराज के इस दूरगामी कार्य की एक झलक आपके सामने पेश करता है। इस अंक में हम छवि कहानी के माध्यम से और अगले अंक में आत्म-अनुभव के माध्यम से स्वामीजी के इस विशेष योगदान का आनंद लेंगे... ◆

मंदिर का अमृत कुंभ उठाया जाता है

सत्पुरुष के वरद करकमलों से

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के विशाल मंदिर-निर्माण कार्य की एक संक्षिप्त चित्रकथा...

■ साधु अक्षरवत्सलदास

कितनी तपस्या, कितनी श्रद्धा, कितनी भक्ति और कितने मंथन के बाद पूरे मंदिर का अमृत कुंभ उठता है! जब ब्रह्मस्वरूप संतविभूति अपनी आत्मा को उण्डेलते हैं, तो एक आदर्श मंदिर खिल जाता है, तब उसमें दिव्य तत्व की खोज होती है, तब परम शान्ति का केन्द्र बन जाता है, दिव्य प्रेरणा की नित्य प्रवाहित गंगोत्री निर्मित हो जाती है, मानव-निर्माण का चौतरफा सुंदर धाम खिलता है और कई चैतन्य मंदिर बनते हैं। ऐसे मंदिर का सही मायने में निर्माण करना आम आदमी का काम नहीं है। ब्रह्मस्वरूप संतविभूति अपना सर्वस्व होम करके मंदिर का अमृत कुंभ समाज को अर्पित करते हैं। युगों से समाज उस अमृत को पी रहा है। इस कलियुग के घोर अंधकार में प्रमुखस्वामी महाराज ने 1200 से अधिक मंदिरों का निर्माण कैसे किया है? आस्था के दीप जलाकर। वे सभी के हृदय में आस्था का दीपक जलाकर संपूर्ण मंदिर का अविष्कार करते थे। जब प्रमुखस्वामी महाराज मंदिर का निर्माण करते थे, तब न केवल मंदिर भवन का निर्माण करते थे, बल्कि अनगिनत लोगों के दिलों में चैतन्य मंदिर खड़ा करते थे, अज्ञान का अंधेरा मिटा देते थे, भक्ति का प्रकाश फैलाते थे। जब प्रमुखस्वामी महाराज मंदिर का निर्माण करते थे, तो कला-कौशल और समर्पण-भक्ति की सौगात देते थे। इसीलिए उन्होंने पूर्ण उदासीन व्यक्तित्व होते हुए भी मंदिर-निर्माण के लिए अविरत पुरुषार्थ किया - भूमि के चयन से लेकर मंदिर में साक्षात् भगवान के निवास तक, मंदिर के निर्माण से लेकर मंदिर का प्रभाव कई पीढियों तक फलता-फूलता रहे ऐसी उनकी मंशा रहती थी। अनेक जनसेवा कार्यों के बीच वे मंदिर-निर्माण में समर्पित रहते थेः भक्तिभाव से। भगवान स्वामिनारायण द्वारा शुरू की गई उपासना-मंदिरों की परंपरा को जीवित रखने के लिए वे भक्ति के साथ अपना जीवन उंडेल देते और फिर लाखों लोगों के लिए मुक्ति के द्वार खुल जाते। आइए, प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी पर्व पर उनकी मंदिर-निर्माण की भक्तिगाथा का आनंद लें।

17-6-1988, टोरंटो, कनाडा

जब मंदिर की भूमि का चयन किया जाता है...

मंदिर-निर्माण की गाथा शुरू होती है - भूमि अधिग्रहण समारोह के साथ।

जब प्रमुखस्वामी महाराज ने हरिभक्त समुदाय को लक्षित करके एक मंदिर बनाने का फैसला किया, तो पहली बात जो सामने आई वह यह थी कि कहां करें मंदिर का निर्माण?

मंदिर का स्थान चुनने में प्रमुखस्वामी महाराज का एक अनूठा विचार रहता था। चुनने के लिए कई जगहों से कभी नक्शे पर तो कभी खुद उस जगह पर जाकर किसी खास ज़मीन पर चुनाव करते थे।

मंदिर-निर्माण में उनके साथ जुड़े सभी लोगों का अनुभव है कि उन्होंने जिस स्थान को चुना वह अंततः मंदिर के लिए सबसे अच्छा साबित हुआ।

मंदिर के लिए भूमि का चयन करते समय वे स्वयं उस स्थान पर जाते थे और सदैव सच्चे हृदय से भगवान से प्रार्थना करते थे।

ठाकोरजी को मंदिर की जमीन पर पधरा कर, सभी जीवप्राणियों की भलाई और सभी के कल्याण के लिए की गई प्रार्थना के वे शब्द, भविष्य के मंदिर की आधारशिला बन जाते थे।

भूमि को आशीर्वाद देने के लिए, वे फूलों की पंखुडियां जमीन पर पधरा कर भूमि को शुद्ध करते थे।

जब कोई भक्त उनकी प्रेरणा से अपनी भूमि मंदिर-निर्माण के लिए दान करते, तो उन पर प्रसन्नता की वर्षा करते। उनके मुंह से शब्द निकलता कि यहां एक मंदिर बनेगा और हजारों लोगों को यहां से अच्छी प्रेरणा मिलेगी। आपके पुण्य की कोई सीमा नहीं है।

मई, 1994, लंदन, यूके

मंदिर नियोजन में पवित्र स्पर्श

मंदिर के लिए भूमि अधिग्रहण के बाद अगला कदम होता - मंदिर की योजना।

प्रमुखस्वामी महाराज के सुझावानुसार विशेषज्ञ आर्किटेक्ट या इंजीनियर सम्भावित मन्दिर का नक्शा तैयार करते समय और स्वामीजी को मन्दिर की योजना प्रस्तुत करते समय स्वामीजी द्वारा दिए गए बहुमूल्य सुझाव या उसमें सुधार करने से विशेषज्ञ भी चकित रह जाते!

उनकी आंखें और उंगलियां मंदिर के नक्शे पर एक विशेषज्ञ वास्तुकार की तरह मँडराती थीं, साथ ही कई उलझनें भी सुलझ जाती थीं। जैसे, मंदिर किस सामग्री से बनाना है? पत्थर या ईंट-चूने-रेत से?

यदि यह पत्थर से बनाना है, तो यह किस पत्थर से बनाएं? पोरबंदर के पत्थर या जैसलमेर के पीले पत्थरों से? खंभों में मकराना संगमरमर या बंसीपहाडपुर का गुलाबी पत्थर?

- ऐसे कई सवालों को बेहतरीन तरीके से हल करने की उनमें अनोखी क्षमता थी। देश-विदेश को प्रभावित करनेवाले मंदिरों की अद्‌भुत रचना में प्रमुखस्वामी महाराज का उत्कृष्ट स्पर्श युगों-युगों तक सभी को आश्चर्यचकित करता रहेगा।

10-2-2010, हिम्मतनगर

जब पहला पत्थर लगाया जाता है...

प्रमुखस्वामी महाराज ने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि मंदिर एक दिव्य वास्तुकला है, इसलिए इसके निर्माण का हर अनुष्ठान शास्त्रीय परंपरा के अनुसार किया जाना चाहिए। इसलिए, मंदिर नियोजन के पहला चरण पूरा होने के बाद, स्वामीजी शास्त्रीय परंपरा के अनुसार भूमिपूजन, शिलान्यास, खातमुहूर्त की विधि परिश्रमपूर्वक करते और इसमें सभी को श्रद्धा से शामिल करते।

जब अनुष्ठान के साथ-साथ मंदिर-निर्माण का पहला पत्थर लगाने की बात आती, तो किस कोने पर आधारशिला रखी जानी चाहिए आदि के बारे में उन्होंने शास्त्रों का सख्ती से पालन किया।

स्वामीजी ने नींव डालने के लिए गड्ढा कितना गहरा और कितना बड़ा किया जाए, अनुष्ठान में हरिभक्तों को कैसे शामिल किया जाए आदि पर भी गहन मार्गदर्शन दिया।

जब शास्त्री मंदिर का शिलान्यास कराते तो स्वामीजी से प्रथम ठाकोरजी की पूजा कराके मंदिर की भूमि की पूजा वेदोक्त विधिपूर्वक करवाते। साथ में, शास्त्रीय परंपरा के अनुसार, देवताओं की पूजा की जाती थी और मंदिर के आधार के रूप में शिला को जमीन में स्थापित किया जाता था।

स्वामीजी प्रथम पंचरत्न और कूर्म आदि की पूजा कर निधिकुंभ की पूजा करते थे।

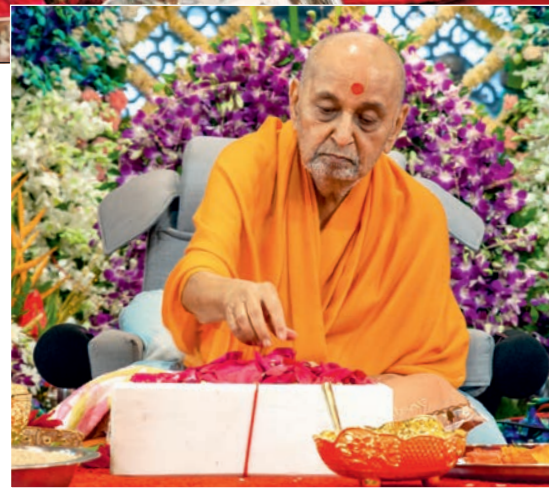

31-8-2011, मुंबई

नींव समारोह में पवित्रता, इच्छा, समृद्धि, उपलब्धि आदि के प्रतीक के रूप में वैदिक अनुष्ठान में अमृतकलश को जमीन में गाड़ कर स्वामीजी प्रथम शिला आरोपित करते। जयनाद करते हुए उत्साह के साथ कहते कि मंदिर का निर्माण कार्य सुचारु रूप से शुरू हो गया है।

स्वामीजी की हृदय भावना यही होती थी कि मंदिर का निर्माण कई लोगों के कल्याण के लिए है। इसलिए जब मंदिर का पहला पत्थर लगाया जाता, तो उनका अनोखा उत्साह सभी के दिलों में उत्साह की लहर जगा देता।

8-12-2005, कोलकाता

पहले स्तंभ का आरोपण...

मंदिर के शिलान्यास समारोह के तुरंत बाद मंदिर का निर्माण कार्य शुरू हो जाता। मंदिर-निर्माण के हर कदम पर प्रमुखस्वामी महाराज की निरंतरता जुड़ी रहती। जगतपीठ, कर्णपीठ या मंदिर का आधार बनाते उस समय स्वामीजी अपनी इच्छा व्यक्त करते कि मंदिर के पहले स्तंभ की स्थापना शास्त्रीय रीति-रिवाजों के अनुसार की जानी चाहिए।

लगातार विचरण के बीच वह पहले स्तंभ की स्थापना के समय मौके पर पहुंच जाते थे। कभी-कभी सुविधा न होने पर मंदिर-निर्माण में लगे संत-कार्यकर्ता स्तम्भ के पत्थरों को उठाकर उस स्थान पर पहुंच जाते जहां स्वामीजी बिराजमान होते। स्वामीजी शास्त्रीय तरीके से उनकी पूजा करते। स्वामीजी विधि-विधान से स्तंभ की पूजा-स्थापना करने के साथ मंदिर-निर्माण कब पूरा करना है इसका लक्ष्य बेशक निश्चित करते।

निर्माण शुरू होने के बाद आने वाली कई छोटी और बड़ी समस्याओं का समाधान भी आसानी से करते। मंदिर के प्रत्येक पत्थर के लिए सटीक होने पर जोर देते। जब मंदिर के पत्थर एक-एक करके रखे जा रहे हों, स्वामीजी समय-समय पर निर्माण कार्य देखने के लिए साइट पर पहुंच जाते थे। यदि व्यक्तिगत रूप से जाना संभव न हो तो वह कार्यकर्ताओं के संपर्क में रहेंगे और मार्गदर्शन देंगे।

स्वामीजी की उपस्थिति और मार्गदर्शन ने हर कदम पर स्तंभ पूजा से लेकर अमलसरा पूजा और मंदिर के शीर्ष पर कलश स्थापना तक सभी को प्रेरणा से भर देते।

दिसम्बर, 1994, अहमदाबाद

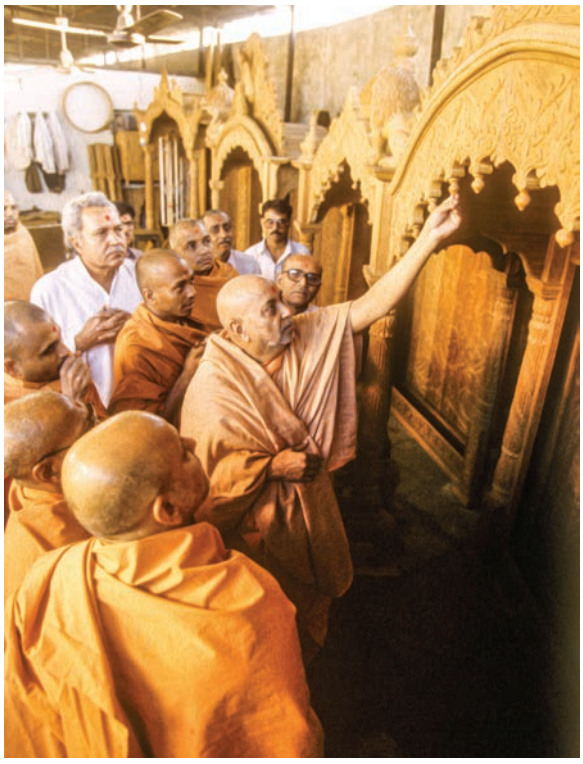

मंदिर : भगवान का सिंहासन...

यह प्रमुखस्वामी महाराज का निरंतर आग्रह था कि मंदिर हर तरह से सुंदर और परिपूर्ण हो। इसलिए, गर्भगृह, गर्भगृह के आंतरिक अंग-उपांग, जहां भगवान निवास करते हैं- आदि के निर्माण में रुचि के साथ स्वामीजी सभी का मार्गदर्शन करते थे। उसकी साफ-सफाई से लेकर भगवान के वस्त्र-आभूषणों की व्यवस्था तक स्वामीजी ने चिवट धारण की। एक ओर मंदिर का निर्माण कार्य चलता हो तो दूसरी ओर स्वामीजी के मार्गदर्शन में मूर्तियों का निर्माण और सिंहासन से लेकर आनुषंगिक व्यवस्था का कार्य भी तेजी से चल रहा होता था।

स्वामीजी ठाकोरजी के सिंहासन सही ढंग से किए जा रहे हैं कि नहीं यह देखने के लिए स्वयं समय निकालते थे कि सिंहासन कहाँ बनाए जा रहे हैं। पहली नजर में, उन्हें उसकी गुणवत्ता का पता चल जाता था। इसमें हर कोई ठाकोरजी के प्रति उनकी भक्ति को महसूस कर सकता था। ठाकोरजी को सिंहासन पर कैसे विभूषित किया जा सकता है? क्या सिंहासन की नक्काशी ठाकुरजी के दर्शन करने में बाधक तो नहीं होती? क्या ठाकोरजी के शृंगार के लिए सिंहासन की रचना पुजारी के लिए बाधा तो नहीं डालती? उनके ऐसे हर सवाल में उनकी भक्ति उमड़ पड़ती।

कलाकार सिंहासन बनाने में स्वामीजी की राय लेना सबसे अच्छा प्रयास मानते थे।

31-7-1994, लंदन, यूके

उत्कृष्ट स्थापत्य कला कौशल...

प्रमुखस्वामी महाराज अर्थात् अद्वितीय स्थापत्य कला कौशल का एक आदर्श उदाहरण।

कई क्षेत्रों की तरह मंदिर-निर्माण में भी उनकी स्थापत्य कला की सूझबूझ ने सभी को चकित कर दिया।

राजधानी दिल्ली और गांधीनगर में स्वामिनारायण अक्षरधाम जैसी विशाल परियोजना हो या मुंबई, कोलकाता, सूरत, राजकोट, लंदन, ह्यूस्टन, शिकागो, अटलांटा, नैरोबी जैसे शहरों के मेगा-मंदिर, उनके वास्तु विचार हर रचना में परिलक्षित होते हैं।

मंदिर की ऊंचाई-चौड़ाई-समरूपता कितनी होनी चाहिए, वहाँ से लेकर पूरे परिसर की योजना बनाने में उनकी विशेषज्ञता ने बड़े-बड़े वास्तुकारों को भी हैरान कर दिया था!

गांधीनगर में अक्षरधाम के निर्माण के दौरान, विशेषज्ञ आर्किटेक्ट और दिग्गज लगातार सात महीनों तक इस बात पर थक गए थे कि परिक्रमा के दोनों सिरों के बीच प्रवेश द्वार कैसे रखा जाए, लेकिन कोई संतोषजनक हल नहीं मिला।

स्वामीजी उस स्थान पर आए और उठ खड़े हुए और बोले प्रदक्षिणा का दोनों सिरा यहां छोड़ दीजिए और बीच में एक वेदिका बना दीजिए जहां पर खड़े होकर लोग अक्षरधाम का आनंद ले सकेंगे। आर्किटेक्ट खुश हुआ और कहा कि मिलियन डॉलर का फैसला!

9-8-1993, अक्षरधाम, गांधीनगर

स्वामिनारायण अक्षरधाम में, स्वामीजी के स्थापत्य विचार हर जगह बिखरे हैं।

जब वे देखने के लिए जगह पर पहुंचते, तो उनकी दृष्टि हर कोने को माप लिया करती... उनके सूक्ष्म अवलोकन में कई चीजें पकड़ में आतीं कि विशेषज्ञ इंजीनियरों या वास्तुकारों को एहसास नहीं होता! उनके पास ऐसी अनूठी अंतर्दृष्टि थी कि आर्किटेक्ट्स और इंजीनियरों के लिए निर्माण की सटीकता पर उनकी मुहर एक बड़ी बात होती!!

15-3-1994, पिंडवाड़ा, राजस्थान

जीवन निर्माण की टंकियां...

मंदिर के निर्माण में स्वामीजी पत्थरों की कला नक्काशी में गहरी रुचि लेते थे। मंदिर का हर पत्थर पूरी तरह से सुंदर और पूरी तरह से पॉलिश किया जाए उसके बारे में व्यस्त कार्यक्रम में भी उन्होंने मंदिर के निर्माण को देखने के लिए राजस्थान के गांवों का दौरा किया। वह उस स्थान पर पहुंचे जहां शिल्पकार पत्थरों पर नक्काशी का काम कर रहे थे। प्रत्येक शिल्पकार के पास जाकर नि:स्वार्थ प्रेम और आशीर्वाद बरसाने, उन्हें बधाई देने, उन पर फूल चढ़ाने, उन्हें प्रसन्न करने के लिए स्वामीजी भारी कष्ट उठाते थे। प्रत्येक में नई ऊर्जा और जोश उभर जाते। मंदिर-निर्माण के दौरान स्वामीजी की एक आपात मुलाकात भी सभी में एक नई चेतना का संचार कर देती। मंदिर के निर्माण में तेजी आ जाती। निर्माण कार्य को संभालनेवाले जिम्मेदार व्यक्ति हों या स्वयंसेवक और कारीगर - स्वामीजी की चेतना सभी में छा जाती। स्वामीजी की दृष्टि प्राप्त कर करने पर ही कुछ अच्छा करने की संतुष्टि सभी के दिलों में स्थापित हो जाती। स्वामीजी एक साथ कई आयामों में मंदिर-निर्माण को संयोजित करते। मंदिर-निर्माण के समय सभी को संबोधित करते हुए स्वामीजी कहा करते थे कि मंदिर के निर्माण के साथ, इस तरह जीवन भी बनाया जाना चाहिए। वे मूर्तिकारों के काम में जितनी सावधानी बरतते थे, उन्होंने उनकी जीवन संरचना में इसे समान रखा। जब वे मूर्तिकारों-कारीगरों से मिले तो उनकी कला की प्रशंसा मात्र से ही संतोष नहीं मानते, लेकिन उन भाइयों का जीवन सुव्यवस्थित, शुद्ध, निर्व्यसन होना चाहिए इसके लिए वह अपना दिल भी निकाल देते। स्वामीजी एक-एक कर व्यक्तिगत रूप से सभी को मिलते। उनके जीवन में गहरी रुचि लेकर उन्हें आत्मीयता से भर देते।

प्रमुखस्वामी महाराज का वात्सल्य मूर्तिकारों से लेकर इंजीनियर-वास्तुकार तक, हर किसी के लिए जीवन-परिवर्तन का साधन बन जाता। जीवन बनाने के लिए मंदिर का उद्देश्य मंदिर के निर्माण के साथ ही शुरू हो जाता।

30-4-1994, लंदन, यूके

समर्पण की प्रतिमूर्ति...

कुछ लोग उत्सुक होते हैं कि अकिंचन प्रमुखस्वामी महाराज जैसे महान व्यक्ति ऐसे भव्य मंदिरों के निर्माण के लिए जरूरी पैसा कहां से और कैसे लाते होंगे?

इस जिज्ञासा के जवाब में सामान्य जीवन स्तरवाले लाखों युवा और वृद्ध भक्तों का समर्पण आंखों के सामने तैरता है।

प्रमुखस्वामी महाराज का एक आह्वान लोगों में समर्पण और उत्साह की लहर फैला देता। उनकी प्रेरणा से आमजन अपने जीवन के गलत खर्च - व्यसन आदि से मुक्त होकर धन की बचत करते और भक्ति भाव से मंदिर-निर्माण में अपना योगदान देते। तपस्या और जीवन की पवित्रता के माध्यम से, एक कोड़ी का सच्चे हृदय से किया गया दान लाखों-करोड़ों रुपयों की तुलना में स्वामीजी के लिए अधिक मूल्यवान था। समर्पण की एक ही चट्टान पर उन्होंने ये बड़े-बड़े मन्दिर बनाए हैं। भक्त कहते हैं, स्वामी बापा! अगर हम खुद को बेचकर भी मंदिर-निर्माण के लिए दान देंगे। संकोच मत रखना, मुझे बताओ, मुझे कितनी सेवा करनी है? और वास्तव में भक्त अपना सब कुछ दे देते। छोटे-छोटे बच्चे भी शौक के लिए अतिरिक्त खर्च से धन बचाकर सेवा करते। अपनी बचत देने के लिए दौड़ पड़ते। बचत कुंभ में बच्चे अपनी एक-एक रुपये की बचत जमा करते और प्रमुखस्वामी महाराज के पास कुंभ ले आते।

कभी-कभी आश्चर्य होता था कि बड़े बुजुर्ग अपनी मेहनत की कमाई को मंदिर के निर्माण में डाल देते, तो दूसरी ओर, पिता के नक्शे कदम पर शिशुओं में भी समर्पण की भावना जागृत हो जाती। केवल तीन-चार वर्ष के शिशु कीर्तन को लगा कि स्वामी बापा मंदिर बना रहे हैं और मैं भी कुछ दान करना चाहता हूं। सरकार की ओर से बच्चों के कोष से मिली राशि का पत्र लेकर वह सीधे अपने पिता के साथ स्वामीजी के पास दौड़ा और उनकी सेवा का पंजीकरण कराने का सुख लूट लिया।

ये मंदिर प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा जनता के प्रति प्रवाहित आस्था और समर्पण के विशाल प्रवाह के जीवंत स्मारक हैं।

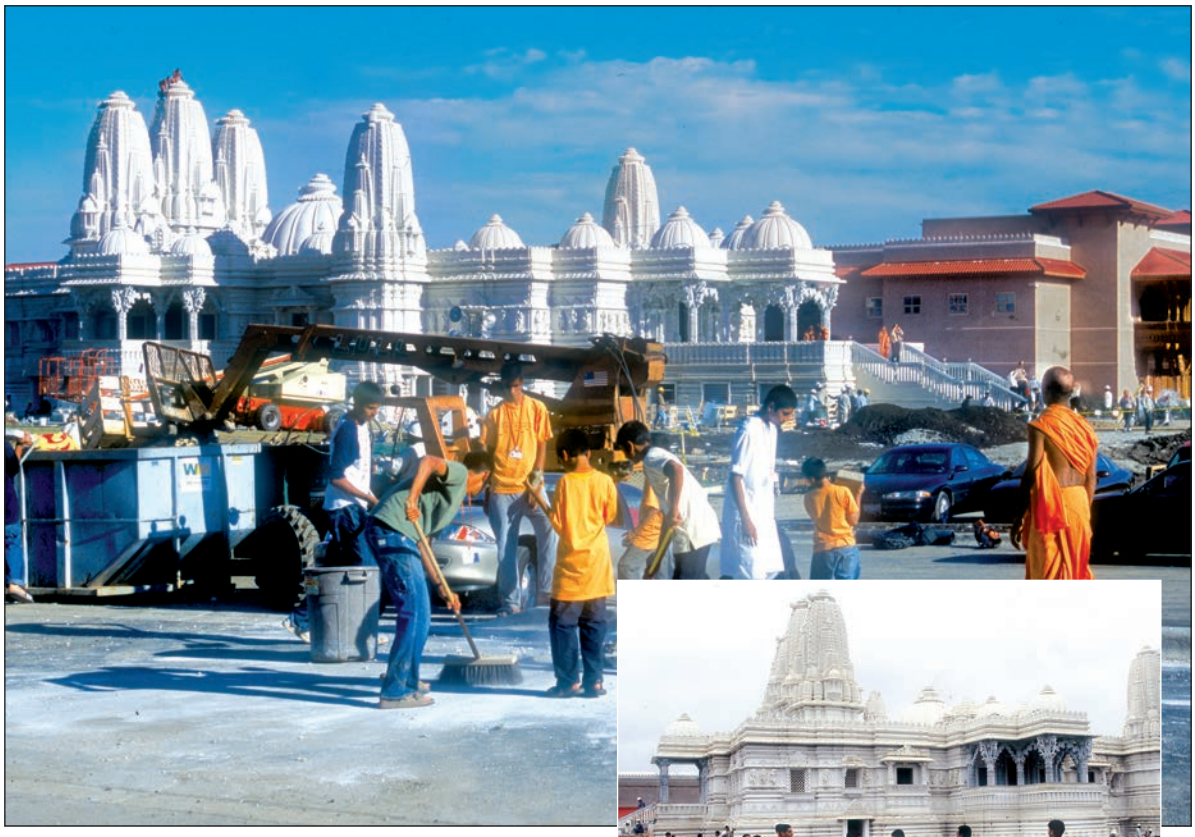

निःस्वार्थ सेवा की स्रोतस्विनी...

मंदिर-निर्माण में श्रम की महिमा महान है। इसलिए सभी भक्त सेवा को केवल पैसे की सेवा के माध्यम से सेवा की संतुष्टि नहीं मानते हैं। हर कोई भक्ति भाव से उनकी सेवा में शामिल होता है। जब प्रमुखस्वामी महाराज ने मंदिरों का निर्माण कराया, बाल-युवा हर कोई आसानी से श्रम सेवा में लग गया था। स्वामीजी के एक आदेश से बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी श्रम करने में जुट जाते। महिलाएं भी पीछे नहीं रहती थीं। भारत में यह सच है, लेकिन बहुत व्यस्त इंग्लैंड-अमेरिका जैसे देशों में समय निकालकर सेवा में जुटना, कड़ी मेहनत वाली सेवा करने के लिए पहुंचना आश्चर्यजनक नहीं है? मंदिर की नींव रखने से लेकर शिखर के पत्थर रखने तक सभी भांति-भांति की सेवा में शामिल होते हैं।

आर्थिक दान देनेवाले बहुत हैं, लेकिन समय दान करनेवाले कम हैं। स्वामीजी के दिव्य आकर्षण के कारण हजारों युवा और वृद्ध लोगों ने भी इस मंदिर के निर्माण में अपना समय दान किया और दानेश्वरी कर्ण को याद किया। किसी ने एक वर्ष तक, किसी ने दो वर्ष के लिए, किसी ने तीन वर्ष के लिए, किसी ने छह महीने के लिए, किसी ने आठ महीने के लिए, किसी ने आठ हफ्तों के लिए, और किसी ने वर्षों तक स्वामीजी के आह्वान पर इन मंदिरों के निर्माण में दिन-रात काम किया है।

हजारों की संख्या में ऐसे भी भक्त होते हैं जो शाम या रात को व्यापार के बाद मंदिर में आते हैं और देर रात तक पूजा-अर्चना करते हैं। कई भक्त व्यवसाय, पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच समय को टालते रहते हैं। कुछ नक्काशी से तैयार किए गए पत्थर के कंटेनरों में भरने का और किसी ने उतराई का काम हाथ में लिया, किसी ने उसे निर्धारित स्थान पर व्यवस्थित करने में अपना समय दिया, किसी ने पत्थर काटने और पीसने के काम में काफी मेहनत की। कुछ ने अपना समय बीमार कारीगरों की सेवा में और अन्य ने कारीगरों की छोटी और बड़ी जरूरतों को पूरा करने के लिए दान कर दिया। कुछ ने कारीगरों को व्यंजन परोस कर एक अच्छा उदाहरण पेश किया।

इस निःस्वार्थ सेवा भाव के पीछे प्रमुखस्वामी महाराज का शांत प्रभाव सहज है। यह रहस्योद्घाटन सभी के द्वारा महसूस किया गया।

8-8-1993, अक्षरधाम, गांधीनगर

भक्ति भावपूर्ण आंतरिक कुशलता...

मूर्ति मंदिर की आत्मा है, इसलिए प्रमुखस्वामी महाराज के मन, मूर्ति का महत्व सबसे अधिक था। मूर्तिकला में उनकी अंतर्दृष्टि भी प्रमुख और गहरी थी। उन्होंने प्रत्येक मंदिर की मूर्ति के निर्माण में सटीकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मंदिरों में ठाकोरजी की मूर्तियां सुंदर होनी चाहिए। मूर्ति को कैसे सुशोभित करें? इसके बारे में उनके सूक्ष्म निर्देश बड़े-बड़े कलाकारों को भी चकित कर देते थे। 'इस मूर्ति का कान थोड़ा ऊपर उठा हुआ है... इस मूर्ति का कंधा थोड़ा पतला लगता है... मूर्ति के गाल थोड़े ऊपर उठाने चाहिए... मूछों के नीचेवाले हिस्से को चिकना करें।' मूर्तियों को देखते ही, उनकी तीक्ष्ण निगाहें तुरंत नाप लेतीं, और कुशल मूर्तिकार उनके मार्गदर्शन से दंग रह जाते! उन्होंने इस मूर्तिकला की अपनी समझ को संतों की नई पीढ़ी तक पहुँचाया और आज संस्थान में कुशल मूर्तिकार कला के अद्‌भुत कार्यों का निर्माण करते हैं! एक ओर जहां कलाकार मूर्ति को महत्व देने वाला होता है, वहीं एक विशेषज्ञ मूर्तिकार-कलाकार इसकी अपूर्णता को देखकर पूर्णता को पुरस्कृत कर देते हैं। स्वामीजी स्वयं भले ही एक पूर्ण विरागी हों, फिर भी भगवान की छवि के लिए उसे किस तरह शृंगार किया जाए, कैसे बाघा पहनाया जाए, किस समय किस तरह के गहने पहनाने चाहिए, ठाकोरजी के थाल को कैसे सही रखा जाए आदि, उनकी भक्ति कला में पूरी कुशलता का परिचय देते। मूर्ति के होठों, मूंछों या गालों पर किया गया छोटे से टीके में भी अल्प क्षति होने का उनका अवलोकन अचंभित करने वाला था! उनके सूक्ष्म सुझाव मूर्ति को पूर्णता में प्रफुल्लित कर देते। मूर्ति की अंगुलियों पर छल्लों की मोटाई से लेकर मूर्ति के नाक और कानों के आकार तक कैसे होने चाहिए - ऐसी सूक्ष्म सोच ही भक्ति के रूप में उभरती है! वे मूर्ति को पत्थर, धातु या पेंटिंग के रूप में नहीं, बल्कि वास्तविक भगवान के रूप में मानते थे। इसलिए, उनके लिए मूर्ति कोई कला नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष भगवान ही थे।

2-7-1995, समुद्र, महाराष्ट्र

निःस्वार्थ भक्ति का बलिदान...

मंदिर का निर्माण कोई स्थूल घटना नहीं है, बल्कि एक सूक्ष्म और आंतरिक चेतना जागृति का अवसर है, जिससे सभी के मन में उत्साह और उल्लास का ज्वार उमड़ पड़ता था।

मंदिर का निर्माण पूरा होने के बाद, मूर्ति का प्रतिष्ठा उत्सव आए तब प्रमुखस्वामी महाराज बड़े-बड़े यज्ञों और शोभायात्रा का आयोजन करके हर जगह उत्साह की लहर फैलाते थे। मूर्तिपूजा से पहले वैदिक यज्ञ अनुष्ठान होता और मूर्तियों की पूजा की जाती तब स्वामीजी कहते कि इस यज्ञ के अनुष्ठान को हम भले ही न समझें, लेकिन इसका आध्यात्मिक प्रभाव निश्चित है। अगर कोई डॉक्टर दवा दे भी दें और हमें समझ न आए तो भी हम उसे लेते हैं, उससे हम ठीक हो जाते हैं, ठीक वैसे इस यज्ञ से आध्यात्मिक लाभ होता है।

स्वामीजी की उपस्थिति में यज्ञशाला का वातावरण हमें वैदिक युग में वापस ले जा रहा है ऐसा लगता। वैदिक मंत्रों का जाप, यज्ञ की लपटें और स्वामीजी जैसे यज्ञपुरुष की उपस्थिति, छोटे-बड़े सबके दिलों में दिव्यता लहराते।

यज्ञ के तुरंत बाद, मूर्तियों की एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन करते थे ताकि मूर्ति के दिव्य दर्शन से पूरा शहर पवित्र हो जाए। ढोल, नगाड़े, मंजीरा-करताल के साथ-साथ भजनों की आवाज से पूरा शहर गूंज उठता था। श्रद्धा से हरे-भरे और प्रभु के स्वागत में हर्षोल्लास से नाच रहे भक्त समुदाय का नजारा रोमांचकारी होता था। जब मंदिर के कपाट खुलते हैं और प्रत्यक्ष भगवान विराजमान होते हैं, तो कितनी उमंग उल्लास की लहर छा जाती है!

25-7-2004, ह्यूस्टन, यूएसए

20-8-1995, लंदन, यूके

साक्षात् परमात्मा का अवतरण...

मंदिर की आत्मा है - मूर्ति!

पत्थर, धातु, लकड़ी या मिट्टी की मूर्तियाँ और निर्जीव मूर्तियाँ सदियों से लाखों भक्तों के जीवन का केंद्र रही हैं!

उनके साथ मूर्ति बात करती है, चलती है, हंसती है, खेलती है और उन्हें खुश करती है!

अनगिनत लोगों की आस्था का जवाब देने वाली अबोल मूर्ति के शब्दों को सुनने के लिए एक अलग भूमिका में गति करनी होती है! उसके लिए भारतीय ऋषियों ने खास प्राणप्रतिष्ठा विज्ञान विकसित किया है। मंदिर के गर्भगृह में प्राणप्रतिष्ठा समारोह मंदिर-निर्माण का सर्वोच्च क्षण है! वैदिक मंत्रों का नाद, जयजयकार, महामंत्र की धुन और वातावरण का दिव्य मिज़ाज।

प्रमुखस्वामी महाराज की उपस्थिति में मूर्तिपूजा के अवसर को देखना भी भक्तों के लिए एक दिव्य सौभाग्य होता था। वैदिक अनुष्ठानों का पालन करते हुए प्रमुखस्वामी महाराज मूर्तियों के सामने प्रकट होने पर वातावरण दिव्य हो जाता था। स्वामीजी मूर्ति में विलीन हो जाते थे, मूर्ति में प्राण को आमंत्रित करते हुए, वे अपने हृदय में निवास कर रहे भगवान को भक्ति के साथ, मंत्रोच्चार करके जब मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करते थे तब मूर्ति के अंगों में साक्षात् परमात्मा का अवतरण हो जाता था। सभी जय-जयकार करने लगते थे। भौतिक पदार्थ से बनी मूर्ति दिव्य हो जाती थी, मूर्ति में परमात्मा के परम तत्व की चेतना उसके प्रत्येक परमाणु के भीतर स्पंदित होती थी, भगवान के सच्चे अवतार समान मूर्ति की आंखों और अभय हस्त से दिव्य परोपकारी अमीवृष्टि का प्रवाह सभी महसूस करते थे।

यह एक अलौकिक क्षण होता था जैसे कि परम दिव्य तत्व अवतरित हो गया हो!

मूर्ति प्रतिष्ठा के समय, प्रमुखस्वामी महाराज मूर्ति के साथ वार्तालाप करे, तब हजारों भावी पीढियों के श्रेय के लिए एक शाश्वत समझौते का करार वे कर रहे हों ऐसा लगता था! स्वामीजी अक्सर कहते थे कि मूर्ति कोई जड़ तत्त्व पत्थर नहीं है, यह भगवान का प्रतीक भी नहीं है। वही प्राणवान साक्षात् भगवान है। आपको हमेशा सुखी करने के लिए यहां विराजमान हुए हैं।

19-5-1996, पांदरी, जिला सुरेंद्रनगर

जून, 1996, लंदन, यूके

भक्ति और सत्संग का नेत्रांजन...

जयकारों के बीच मंदिर की प्रतिष्ठा पूर्ण हो जाए, मंदिर के गर्भगृह में विराजमान भगवान की आरती जब स्वामीजी करते थे, तो वह पहली आरती आने वाली कई आरतियों का शुभ संकेत बन जाती थी।

मंदिर में सुबह-शाम गूँजती है आरती की आवाज, नगाडे-घंट बजने लगते हैं, शंखनाद आकाश को भेदता है, और इससे भी अधिक भक्तों का जयनाद अंतरिक्ष-आकाश में छा जाता है।

प्रमुखस्वामी महाराज मंदिर-निर्माण और प्रतिष्ठा को कार्य की सफलता नहीं मानते थे।

प्रत्येक मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव के अंत में स्वामीजी के निर्देशानुसार, सभा आयोजित होती थी, चाहे मंदिर छोटा हो या बड़ा, मंदिर गाँव में हो या शहर में, सभा हॉल छोटा हो या बड़ा, मंदिर-निर्माण की खुशी और उल्लास के बीच प्रमुखस्वामी महाराज की यह शाश्वत आवाज जरूर सुनने को मिलती थी कि यहां ठाकोरजी की प्राण प्रतिष्ठा हो गई अब यहां साक्षात् भगवान विराजमान हुए हैं। इसलिए सभी को यहां रोजाना दर्शन के लिए आना चाहिए। सुबह-शाम आरती में भाग लें, सत्संग में बैठें, ठाकुरजी से प्रार्थना करें, तो भगवान तुम्हारी सब संभाल लेंगे।

सिर्फ मंदिर का निर्माण पूरा हो जाने से ही काम खत्म नहीं हो जाता। असली काम अब शुरू होता है। अब भगवान को हमारे हृदय में निवास कराना है। स्थूल मंदिर से अब चैतन्य मंदिर बनाना है। यही है इस मंदिर का उद्देश्य! आइए, अपने हृदय को इतना पवित्र और विशुद्ध बनाएं कि वहां भगवान विराजमान हो जाएं, तो इसका मतलब है कि चैतन्य मंदिर तैयार है। उसके लिए हमें नियमित सत्संग, सत्समागम करना चाहिए।

स्वामीजी की बात यहीं नहीं रुकती, मंदिर के निर्माण के साथ-साथ स्वामीजी सत्संग सभाओं का एक सतत चक्र चालू करते जो हमेशा के लिए चलता रहे। उसके लिए मंदिरों के प्रांगण में सुंदर सभा भवन भी बनाते थे। जिसमें दिन-रात बाल-युवा-महिला-संयुक्त सत्संग की गतिविधियां चलती रहतीं। दैनिक सत्संग और भक्ति को बढ़ावा देकर, प्रमुखस्वामी महाराज ने विभिन्न प्रकार के मंदिरों का निर्माण किया है, जहाँ लाखों भक्त धन्यता महसूस करते हैं।

लंदन के बी.ए.पी.एस. इसके निर्माता स्वामीजी को मंदिर, 1995

मंदिर का मूर्त स्वरूप...

मंदिरों की शाश्वत भारतीय परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्रमुखस्वामी महाराज स्वयं एक महान मंदिर बनकर, जंगम तीर्थ के रूप में अनगिनत लोगों को पवित्र किए। उनके स्पर्श से, दृष्टि से, सुनने से, स्मृति से अनगिनत लोगों में तीर्थयात्रा करने की दिव्य अनुभूति होती थी।

ऐसा क्यों? क्योंकि भगवान के अतिरिक्त उनका अपना कोई अस्तित्व नहीं था। और वे स्वयं एक सनातन मंदिर बनकर परमात्मा को अपने हृदय में निवास कराया था। पुरुषोत्तम नारायण उनके रोमेरोम में विराजमान थे। इसलिए, उनके सम्बंध में कई अन्य चैतन्य मंदिरों का निर्माण होता था। ये मंदिर बच्चों, युवाओं, बुजुर्गों, महिलाओं सहित सभी के लिए जीवन-निर्माण का अनूठा धाम बनकर सभी के लिए आध्यात्मिक विश्राम स्थल बनते जा रहे हैं।

पृथ्वी पर उनके द्वारा बनाए गए स्थूल मंदिर कभी-कभी समय के विशाल प्रवाह में जीर्ण-शीर्ण हो सकते हैं, लेकिन वे कई चैतन्य मंदिरों का निर्माण किए, अर्थात् यहाँ पुण्यात्मा बननेवाले भक्तों द्वारा युगों-युगों तक नये मन्दिरों की शृंखला बनती रहेगी।

आज महंतस्वामी महाराज के माध्यम से प्रमुखस्वामी महाराज की वही आभा और प्रतिभा नूतन चैतन्य मंदिरों की शृंखला को रोशन कर रही है। ऐसे मंदिर देंगे समाज को सच्ची ऊर्जा और सकारात्मक प्रेरणा।

संगठनभाव-एकता-सुहृदभाव की ज्योति प्रज्वलित करते रहेंगे। उन्होंने एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को जगाया, कई युगों से इन चैतन्य मंदिरों की ज्वाला संस्कृति और अध्यात्म के दीप जगमगाते रहेंगे... ◆

प्रकट ब्रह्मस्वरूप परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज के विचरण समाचार

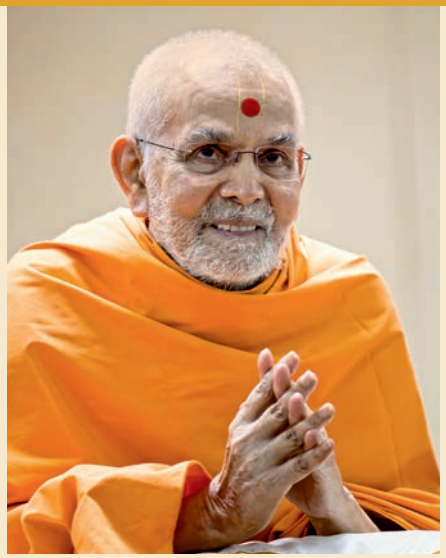

अहमदाबाद में श्री महंतस्वामी महाराज...

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के पदचिन्हों पर चलते हुए उनके उत्तराधिकारी परम पूज्य महंतस्वामी महाराज 89 वर्ष की आयु में भी मुमुक्षुओं को निरंतर विचरण करके दिव्य सत्संग का लाभ देते रहे हैं। हजारों मुमुक्षुओं को स्वामीजी के सांनिध्य में रहकर अध्यात्म पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिल रही है। कोरोना महामारी की तीसरी लहर के बाद जब स्वामीजी का विचरण फिर तेज़ हो गया है। स्वामीजी अटलादरा-वडोदरा में लगातार तीन महीने सत्संग का लाभ देकर सबसे पहले सूरत पहुंचे। जहां तीन महीने से अधिक समय तक निवास कर स्वामीजी ने पूरे दक्षिण गुजरात के भक्तों को आध्यात्मिक लाभ दिया।

हाल ही में 1-6-2022 दिनांक से 15-8-2022 तक शाहीबाग, अहमदाबाद में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान होकर, स्वामीजी ने आषाढ़-श्रावणी मेघ की तरह सत्संग-भक्ति की एक अंतहीन वर्षा की। ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी उत्सव पर अहमदाबाद में स्वामीजी का प्रवास सभी के लिए एक विशेष स्मृति बन रहा।

स्वामीजी की उपस्थिति में, नए त्योहारों ने आकार लिया। प्रमुखवरणी दिवस, रथ यात्रा उत्सव, गुरुपूर्णिमा, रक्षा बंधन, स्वतंत्रता दिवस के अलावा, स्वामीजी ने विभिन्न केंद्रीय विचारों के साथ आयोजित सत्संग सभाओं में दिव्य लाभ दिया। साथ में शाहीबाग बी.ए.पी.एस. मंदिर के शिखरों में गुरुवरों की मूर्तियों का पुन: प्रतिष्ठा, जगतपुर में निर्माणाधीन शिखर मंदिर के प्रथम स्तंभ की पूजा, विदेशों में बी.ए.पी.एस. संस्थान द्वारा स्थापित हो रहे अनुसंधान संस्थानों का उद्घाटन और शैक्षिक संगोष्ठियों जैसे विशेष अवसरों पर दी गई यादें संतों और भक्तों पर हमेशा के लिए अंकित हो गईं। वृद्ध आयु में भी स्वामीजी ने अनेक शारीरिक रोगों की उपेक्षा की, असह्य परिश्रम को सहा और सभी को दर्शन, प्रसादी, बातचीत और मिलन के चार सुख दिए। स्वामीजी ने मंदिर के बगल में बने शामियाने में संतों और भक्तों को भोजनदर्शन का लाभ देकर विशेष सुख दिया। हरिभक्तों के अलावा, विभिन्न समाजों के नेताओं, उच्च अधिकारियों, पेशेवरों, शाही पुरुषों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने मंदिर में ठाकोरजी और स्वामीजी के दर्शन-आशीर्वाद का दौरा किया। स्वामीजी की पवित्र तपस्या, दिव्यता और शांति ने सभी को प्रभावित किया।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का शताब्दी उत्सव शानदार तरीके से मनाना, स्वामीजी की हृदय की इच्छा है! इसे विभिन्न अवसरों पर महसूस किया गया। स्वामीजी ने शताब्दी महोत्सव की सेवा में शामिल संतों-स्वयंसेवकों को बैठकों और आयोजनों में विशेष मार्गदर्शन दिया, और उन सभी को प्रमुखस्वामी महाराज की अद्वितीय महिमा का जश्न मनाने और उनकी शताब्दी महोत्सव न भूतो न भविष्यति मनाने के लिए प्रेरित किया। 14 जून को स्वामीजी ने व्यक्तिगत रूप से शताब्दी समारोह स्थल का दौरा किया, यहां निर्माणाधीन विभिन्न परियोजनाओं का निरीक्षण किया और अपार संतोष व्यक्त किया। यहां सेवा में शामिल हुए स्वयंसेवकों पर भी विशेष कृपावर्षा की।

स्वामीजी की उपस्थिति से अहमदाबाद में ऐसा दिव्य वातावरण बना जैसे कि कोई भक्ति आंदोलन जाग्रत हो गया हो! पूर्व-नियोजित कार्यक्रम के अनुसार, स्वामीजी ने अलग-अलग दिनों में पूरे अहमदाबाद शहर और ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा उत्तर गुजरात के गांधीनगर, मेहसाणा, बनासकांठा, साबरकांठा, पाटन जिलों और सौराष्ट्र, कच्छ, काठियावाड़ और राजस्थान के विभिन्न शहरों और गांवों से उमड़े भक्तों को निकट दर्शन का लाभ दिया। रविसभा और विशेष उत्सव सभा के दिनों में हजारों मुमुक्षुओं को आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ स्वामीजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। अपने आशीर्वाद में, स्वामीजी ने बार-बार सभी से जीवन में आध्यात्मिक मुद्दों जैसे आपसी सम्मान, दया, एकता, दिव्यभाव, दासता, महिमा, निर्दोषबुद्धि, गुणग्रहण एवं भगवत्प्राप्ति के बारे में जागरूकता, भगवान को सर्वोच्च के रूप में जानने, गुणातीत गुरुओं में अटूट विश्वास विकसित करने का आग्रह किया।

स्वामीजी के प्रवास के दौरान बच्चों

से लेकर बुजुर्गों तक सभी शाहीबाग स्थित बी.ए.पी.एस. मंदिर आकर सुबह शाम सत्संग का लाभ लेते थे पुरुष महिला बाल बालिका युवक युवतियां सभी ने व्रत उपवास एवं भक्ति सम्बंधी नियम पालन करके विशेष भक्ति प्रस्तुत की। ठाकोरजी समक्ष स्वामीजी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की। स्वामीजी की पवित्र उपस्थिति में, कई हरिभक्तों ने गुरुहरि प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह पर विभिन्न व्रत-तप-उपवास-मलजप आदि अनुष्ठान किए।

बाल-किशोर-युवा-कार्यकर्ताओं ने प्रात: पूजन से लेकर स्वामीजी तक विभिन्न पर्वों एवं सत्संग सभाओं में आध्यात्मिक एवं प्रेरक कार्यक्रम प्रस्तुत कर गुरुहरि का आनन्द प्राप्त किया। साबरकांठा के आदिवासी हरिभक्तों ने क्षेत्रीय भाषा में भजन और भक्ति नृत्य भी किए।

अहमदाबाद प्रवास के दौरान स्वामीजी ने देश-विदेश में बने बी.ए.पी.एस. के 9 मंदिरों में प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों की वेदोक्त प्राणप्रतिष्ठा की। इसके अलावा, उन्होंने सैकड़ों वस्तुओं को प्रसादीभूत करके भक्तों को संतुष्ट किया।

हम स्वामीजी द्वारा अहमदाबाद प्रवास के दौरान पिछले अंक में दिए गए दिव्य सत्संग लाभ का पहले ही आनंद ले चुके हैं। आइए, हम यहां 20 जुलाई से स्वामीजी द्वारा दी गई दिव्य कृपा का आनंद लें।

● 20 जुलाई एक ऐसा ऐतिहासिक दिन जब ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने वर्ष 2012 में परम पूज्य महंतस्वामी महाराज को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, अहमदाबाद में अपने हाथ से एक पत्र लिखा। इस शुभ दिन को विभिन्न तरीकों से मनाया गया। साथ ही स्वामीजी ने साधु मुकुंदचरणदास द्वारा लिखित पुस्तक कर्म और पुनर्जन्म हिंदू सिद्धांत और विश्वास के चौथे अंग्रेजी संस्करण का उद्घाटन किया।

● 22-7-2022, ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह के अवसर पर, लंदन बी.ए.पी.एस. मंदिर में मनाए जानेवाले प्रेरणा उत्सव का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर किया। साथ ही उनकी स्मारिका का विमोचन भी किया।

● 25-7-2022 को स्वामीजी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका के रॉबिन्सविले में निर्माणाधीन अक्षरधाम की सेवा में लगे विभिन्न विभागों के स्वयंसेवकों को आशीर्वाद दिया और लिखा: 'संप के साथ सेवा।'

● 28, 29-7-2022 को, स्वामीजी ने हिम्मतनगर क्षेत्र के रतनपुर, चित्रोडी, इटाडी, नवासामेरा, कनेरा, कालियाकुवा और इप्लोडा में बी.ए.पी.एस. मंदिरों में प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा औपचारिक रूप से की। इन सत्संग केंद्रों से आए श्रद्धालुओं को स्वामीजी ने दर्शन-आशीर्वाद दिया, मंदिर में दर्शन व भजन-भक्ति-कथा का लाभ लेने को कहा।

● 30-7-2022 को हिम्मतनगर के हरिभक्तों ने अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की तुला करके विशेष भक्ति की। स्वामीजी ने इन सभी भक्तों को आशीर्वाद दिया।

● सारंगपुर में 6-8-2022 को कार्यरत बी.ए.पी.एस. संस्कृत महाविद्यालय के छात्रों ने अक्षरपुरुषोत्तम दर्शन मुखपाठ महोत्सव के भाग के रूप में स्वामीजी के समक्ष मुखपाठ प्रस्तुत किया और गुरुहरि की प्रसन्नता प्राप्त की।

● 14-8-2022 को स्वामीजी ने अहमदाबाद में शास्त्रीजी महाराज के प्रासादिक स्थान पर स्थापित करने के लिए श्रीहरि के संगमरमर के चरणारविंद का प्रतिष्ठा-पूजन किया।

● 15 अगस्त भारत की आजादी का अमृत पर्व। भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, पूरे वर्ष दौरान विभिन्न देशभक्ति कार्यक्रम आयोजित किए गए। आजादी के अमृत महोत्सव को मनाने के लिए पूरे देश को देशभक्ति के रंग में रंगा गया। इस सिलसिले में सभी बी.ए.पी.एस. मंदिरों में भी स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। शाहीबाग, अहमदाबाद में बी.ए.पी.एस. मंदिर के प्रांगण में परम पूज्य महंतस्वामी महाराज ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सलामी दी। उन्होंने आजादी के अमृत महोत्सव की भी शुभकामनाएं दीं। स्वतंत्रता दिवस पर संतों और भक्तों ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी, राष्ट्रगान गाया और देशभक्ति का परिचय दिया।◆

अहमदाबाद में गुरुहरि महंतस्वामी महाराज के सांनिध्य में मनाया गया गुरुपूर्णिमा पर्व

13-7-2022, आषाढ़ पूर्णिमा के पावन दिन, अहमदाबाद में प्रकट गुरुहरि परम पूज्य महंतस्वामीजी महाराज की उपस्थिति में हजारों भक्तों ने गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरुवंदना की।

ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के समय से ही तीर्थधाम बोचासन में प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। इसी प्रकार इस वर्ष भी वरिष्ठ संतों की उपस्थिति में बोचासन में गुरुपूर्णिमा उत्सव मनाया गया। लेकिन गुरुहरि महंतस्वामीजी महाराज ने इस वर्ष गुरुपूर्णिमा के विशेष अवसर पर अहमदाबाद के हरिभक्तों को लाभान्वित किया।

गुरुपूर्णिमा के शुभ दिन पर अहमदाबाद और अन्य शहरों से हजारों हरि भक्त विभिन्न व्रतों, तपस्याओं और उपवास के साथ पदयात्रा करके गुरुहरि के दर्शन करने पहुंचे। भक्तिमय वातावरण के बीच गुरुहरि की प्रात:कालीन पूजा के दर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ पाकर आज के गौरवशाली दिन पर सभी ने कृतार्थता महसूस की।

सनातन हिंदू धर्म में भगवान के बाद दूसरा स्थान गुरुदेव को दिया गया है। असंख्य श्लोक-दोहा-पद गुरु की अतुलनीय महिमा को परमात्मातुल्य के रूप में गाते हैं। ऐसी गुरुमहिमा बी.ए.पी.एस. संस्था में सभी में व्याप्त है।

प्रात: स्वामीजी की पूजा में संगीतकार संत-युवाओं ने गुरुमहिमा के श्लोक गाए और गुरुवंदना की।

शाम के मुख्य समारोह में गुरुवंदना के भक्ति गायन के बाद, आत्मतृप्त स्वामी ने हिंदू-शास्त्रों में दर्ज गुरुमहिमा के संदर्भों को उद्धृत किया और गुरुदेव की महिमा का विशेष गान किया।

गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर, हर कोई चाहता है कि हम गुरुभक्ति करें लेकिन इस गुरुभक्ति का भुगतान करने का तरीका भी गुरु से ही सीखना है। और इसीलिए आज का गुरुपूर्णिमा उत्सव-सभा मुख्य विचार था कि गुरुओं के नक्शेकदम पर चलना...

बैठकों का सिलसिला केंद्रीय विचार से शुरू हुआ। एक के बाद एक अध्यायों ने गुरुवर्यों के पदचिन्हों का अनुसरण किया, इस बात से प्रेरित होकर कि कैसे हमारे दिव्य गुरुवरों ने अपने गुरुवर्यों को प्रसन्न किया और गुरुभक्ति के आदर्श की स्थापना की।

पहला अध्याय था कि ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की गुरुभक्ति गुणातीतानंद स्वामी के प्रति। भले ही भगतजी महाराज को संप्रदाय से बहिष्कृत कर दिया गया था, उन्होंने इस बात पर जोर देकर विशेष गुरुभक्ति

प्रस्तुत की कि गुणातीतानंद स्वामी मूल अक्षर हैं। पूज्य आदर्शजीवन स्वामी ने अपने संबोधन में भगतजी महाराज की गुरुभक्ति, गुरुभक्ति का सबसे अच्छा उदाहरण दिखाया।

दूसरा अध्याय था: ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज की गुरुभक्ति गुरुवर्य भगतजी महाराज के प्रति।

इस अवसर पर बी.ए.पी.एस. संगठन के संस्थापक और गुणातीत गुरु परंपरा के तीसरे गुरुदेव-गुरुवर्य भगतजी महाराज की महिमा का प्रवर्तन, ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज की गुरुभक्ति में एक अद्‌भुत अध्याय था। अनेक कष्टों और अपमानों के बीच गुरुवर ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की महिमा को देश-विदेश में पहुंचा दिया।

शास्त्रीजी महाराज ने गुरु भगतजी महाराज का सम्मान उसी स्थान पर किया जहाँ जूनागढ़ में भगतजी महाराज को बहिष्कृत किया गया था, इस प्रसंग की स्मृति स्क्रीन पर एक नृत्य प्रदर्शन द्वारा की गई।

तीसरा अध्याय था: ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के प्रति अद्वितीय गुरुभक्ति।

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज गुरुभक्ति के अवतार थे। उनमें भी योगीजी महाराज ने अटलादरा में शास्त्रीजी महाराज का शताब्दी उत्सव भव्य तरीके से मनाया और अद्वितीय गुरुभक्ति का प्रदर्शन किया इसे वीडियो के माध्यम से अवलोकित किया।

योगीजी महाराज को गुरुभक्ति में अवगाहन कराते हुए, पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने कहा कि योगीजी महाराज ने शास्त्रीजी महाराज के शताब्दी उत्सव की सेवा के लिए असहनीय ठंड में चरोतर में गाँव-गाँव की यात्रा की। उनके मन में गुरु शास्त्रीजी महाराज की शताब्दी को धूमधाम से मनाने की भावना थी। इस पर्व को मनाने के लिए योगीजी महाराज के मुखारविंद पर खासा उत्साह देखने को मिला।

योगीजी महाराज ने जीवन में कितनी परेशानियों का सामना किया, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। आधी रात में भी रसोई पकाकर उन्होंने राज़, हरिभक्तों को जिमाया है। ऐसे अंतहीन अवसर हैं जहां गुरु शास्त्रीजी महाराज के आदेशों का उन्होंने पालन किया है।

तीनों अवस्थाओं में योगी बापा शास्त्रीजी महाराज का ही अनुसरण करते थे। चालीस वर्ष से उन्होंने शास्त्रीजी महाराज की इच्छा अनुसार किया। हमने देखा है कि योगी बापा के जीवन में गुरु-शिष्य का रिश्ता कैसा होना चाहिए।

चौथा अध्याय था: ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की गुरुवर्य योगीजी महाराज के लिए अद्वितीय गुरुभक्ति।

पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज ने पूरा जीवन गुरुवर्य की इच्छानुसार जिया है। योगीजी महाराज के प्रति अपनी अनूठी गुरुभक्ति का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने गांधीनगर में लगातार एक महीने तक योगी शताब्दी महोत्सव भव्य तरीके से मनाया। वीडियो के जरिए सभी ने इस त्योहार को याद किया। प्रमुखस्वामी महाराज ने न केवल गुजरात बल्कि पूरे भारत और विदेशों में इस त्योहार की गूँज को फैलाने के लिए एक बहुत ही समर्पित प्रयास किया। पूज्य आनंदस्वरूप स्वामी ने ऐसी दिव्य घटनाओं को दर्ज किया कि जिसमें प्रमुखस्वामी महाराज की नसों में योगीजी महाराज के प्रति गुरुभक्ति बह रही हों।

गुरुवर्यों के पदचिन्हों पर चलकर, गुरुभक्ति प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित होकर, सभी युवा और बूढ़े गुरु की महिमा में लीन हो गए। स्वामीजी के आगमन के साथ ही दिव्य वातावरण की लहर सभा में लौट आई। दोनों सभागारों में बैठे सभी ने बुलंद जयनाद से गुरुहरि के चरणों को प्रणाम किया।

पाँचवाँ और अंतिम अध्याय था: प्रकट गुरुहरि महंतस्वामी महाराज के हृदय में गुरुवर्य प्रमुखस्वामी महाराज के प्रति समर्पण और उनकी शताब्दी मनाने का अनूठा उत्साह।

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव मनाने के लिए महंतस्वामी महाराज कैसे उत्साहित हैं? उनके स्वलिखित पत्रों में समय-समय पर उनके दर्शन होते हैं। सभी ने उन पत्रों की वीडियो समीक्षा की जिन्होंने सभी को शताब्दी में सेवा के लिए आने के लिए प्रेरित किया।

एक निशान: प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव। पूज्य आत्मस्वरूप स्वामी, जिन्होंने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से कई क्षेत्रों में शताब्दी महोत्सव के चिह्न लगाने के लिए स्वामीजी के उत्साह को लगातार देखा है, विभिन्न पहलुओं पर एक जोरदार व्याख्यान देकर दर्शकों को उत्साह से भर दिया।

अंत में स्वामीजी ने गुरुपूनम के जय स्वामिनारायण कहकर प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी पर्व में सेवा-भक्ति की विशेष प्रेरणा देते हुए कहा कि शताब्दी की सेवा में सभी लग गए हैं, लेकिन सभी में परस्पर दिव्यता होनी चाहिए। श्रीजी महाराज ने दिव्यभाव के बारे में बहुत कुछ कहा है और यह तभी मजेदार होगा जब आपके पास दिव्यभाव हो।

श्रीजीमहाराज ने कहा है संत और भक्त सभी दिव्य हैं। जो कोई भी इस रहस्य को जानता, समझता और सोचता है, वह लीन हो जाता है और संसार को

जीत लेता है। आठों पहर उसके आनंद का ठिकाना नहीं रहता। इन चार पंक्तियों में सब कुछ कह दिया गया है।

प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी वर्ष के अवसर पर, सभी के पास अपना कामकाज है, लेकिन इसमें थोड़ा आगे पीछे करके सेवा करें। यह शताब्दी फिर कब आएगी!? और सभी गुरुओं ने अपने गुरुओं के लिए कितना कुछ किया है!? इसे ध्यान में रखते हुए, आइए हम अंतर को भरें। एक ही ख्याल होना चाहिए कि शताब्दी के लिए क्या करें! हर सुबह उठते ही यही विचार करना चाहिए। और इस अवसर को चूकना एक बहुत बड़ा नुकसान होगा। तो चलिए इस मौके को हाथ से न जाने दें।

शताब्दी की प्रेरणा से आशीर्वाद पाकर सभी धन्य हो गए।

इस अवसर पर स्वामीजी करकमलों द्वारा चार नए प्रकाशनों का विमोचन किया गया: (1) ब्रह्मस्वरूप श्री प्रमुखस्वामी महाराज विस्तृत जीवनी भाग -7 (2) प्रमुख शताब्दी वंदना (ऑडियो कीर्तन प्रकाशन) (3) स्वामीजी - हमारा सबसे अच्छा दोस्त (4) सत्संग दीक्षा (स्पेनिश)।

उत्सव सभा का अंतिम चरण गुरु पूजन था। वैदिक भजनों के बीच सभी ने प्रकट गुरुहरि के चरणों में पुष्पांजलि अर्पित की और गदगद कंठ से प्रार्थना करते हुए गुरुभक्ति की पेशकश की। देश-विदेश में रहनेवाले लाखों हरिभक्तों को भी लाइव प्रसारण के माध्यम से गुरुपूर्णिमा के दिव्य अवसर का आनंद उठाकर घर बैठे गुरुपूजन का लाभ मिला।

गुरुपूजन के बाद शत शत वरस सरे गुरु जीवन ज्योत जले की धुन पर भक्ति नृत्य पेश किया गया। नृत्य के दौरान सभी हरिभक्तों की ओर से संतों ने कलात्मक हारतोरों से गुरुहरि की स्तुति की और आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी ने इष्टदेव और गुरुदेव की याद में आरती उतारी।

गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रकट गुरुहरि की उपस्थिति में सभी ने कृतज्ञतापूर्वक गुरुवर्यों के पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरणा प्राप्त की। अंत में प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी महोत्सव के जयनादों के साथ इस उत्सव का समापन हुआ।

■ गुरुगुण महिमा सभा

24-7-2022 को आयोजित रविसभा सत्पुरुष के गुणों का प्रदर्शन करने वाली एक विशेष बैठक होने जा रही थी। सद्गुणों के सागर महंतस्वामी महाराज के केंद्रीय विषय पर आयोजित आज की बैठक में सेवक-संतों ने गुरुहरि के गुणों का दर्शन कराया। जैसे कि निर्दंभता, नि:स्वादिता, निर्मानीता, स्थितप्रज्ञता, नम्रता, भक्ति, रचनात्मकता, स्थितिजन्य जागरूकता, अरुचि आदि। साथ ही, स्वामीजी के उद्देश्य और दिव्यता पर उनके प्रवचन को क्रमश: श्रीजीस्वरूप स्वामी और आत्मस्वरूप स्वामी ने लाभान्वित किया। प्रत्येक व्याख्यान के साथ एक थीम-नृत्य प्रस्तुत किया गया, सद्गुणों के सागर, महंतस्वामी जग से न्यारे, वारिस ए तो गुणातीत के प्रमुखस्वामी के प्यारे... व्याख्यान के अनुरूप गुणदर्शन का एक वीडियो भी दिखाया जाता था।

अंत में स्वामीजी ने आशीर्वाद में कहा कि श्रीजी महाराज ने कहा कि सब में दिव्य भाव रखो। यही सार है। अनंत दोषों में यह सारभूत बात कहाँ से हाथ लगे? लेकिन श्रीजी महाराज ने जो कहा है वह सच है। जो इसमें गुण ग्रहण करता है वह बुद्धिमान है। सत्संग में हमें सब कुछ दिव्य, दिव्य, दिव्य देखना है।

योगी बापा दिव्यता की मूर्ति थे। उनके शब्द दिव्यता से भरे हुए थे। योगी बापा के प्रताप से महिमा एवं दिव्यता की विजय हुई है। यदि जीवन में सुखी रहना है, आनंदित रहना है तो एक दूसरे

को दिव्य समझें।

■ सेवा-महिमा सभा

31-7-2022 को रविसभा में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज और प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज की सेवा के प्रसंगों को संवाद-प्रवचन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था। गुणातीत गुरुओं ने शरीर को देखे बिना कठिन परिस्थितियों में महान सेवा करके सत्संग को नवपल्लवित रखा है। कार्यकर्ताओं ने एक संक्षिप्त संवाद के माध्यम से गुरुवर्यों द्वारा सेवा करने के लिए प्रेरित सेवा प्रतिज्ञा की कहानियां प्रस्तुत कीं और सेवा की महिमा पर जोर दिया। भक्ति नृत्य में भी सेवा-महिमा की झलक दिखाई दी।

अंत में, सभी की सेवा की भावना की सराहना करते हुए और विशेष सेवा का आह्वान करते हुए, स्वामीजी ने कहा कि हमने सेवा कार्यक्रम देखा। हर कोई उससे अधिक उत्साही है। शताब्दी सेवा में सभी घुटने टेक रहे हैं। असुविधा - सुविधा कोई भी हो। आपको कहीं से भी जो सेवा मिले, उसे सहर्ष स्वीकार करें। सबका ध्यान सेवा पर है। शास्त्री जी महाराज, योगीजी महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज ने बहुत सेवा की है। उन दिनों न खाना, न लोग, हर तरह की परेशानी, बेचैनी और बेचैनी थी, लेकिन कितने उत्साह से उन्होंने सेवा की! अभी भी सब सेवा में लगे हैं। आप सभी को धन्यवाद। आज की बैठक में महान गायक श्री नितिन मुकेश ने भाग लिया। उन्होंने शताब्दी समारोह में जिनके हृदय श्रीराम बसे, उन और को नाम लियो ना लियो की भक्ति की पंक्तियों को गाकर यात्किंचित् सेवा प्राप्त करने की प्रार्थना की। स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

■ प्रमुखस्वामी महाराज अंतर्धान दिन

7-8-2022, श्रावण सुद दशम ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की 6ठी अंतर्धान तिथि है। आज रविसभा में 'प्रमुखस्वामी महाराज स्मृतिदिन' के रूप में मनाया गया।

बैठक का मुख्य विचार था कि प्रमुखजी, मैं आपकी दया का प्रतिफल कैसे दूं? दूसरों की भलाई में हमारा भला के नारे को अपना जीवनमंत्र बनाकर प्रमुखस्वामी महाराज ने अपनी जीवनयात्रा के दौरान इस सिद्धांत पर अपने अनूठे कार्यों के माध्यम से मानव जाति पर अनंत उपकार किए हैं। लाखों हरिभक्तों को परम पूज्य महंतस्वामी महाराज की गुरु के रूप में भेंट उनकी विशेष कृपा है। इस महान व्यक्ति की स्मृति को ऐसे अनंत और अनंत उपकार की स्मृति से अधिक भुगतान नहीं किया जा सकता है, लेकिन उनके गौरवशाली कार्यों का प्रदर्शन और हर तरह से उनकी शताब्दी का उत्सव हमारी गुरुभक्ति है। इन्हीं मूल्यों को प्रस्तुत करते हुए सामयिक प्रवचन विवेकसागरदास स्वामी, यज्ञप्रियदास स्वामी, आत्मस्वरूपदास स्वामी और ईश्वरचरणदास स्वामी द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक व्याख्यान से संबंधित एक प्रासंगिक वीडियो दिखाया गया था। आज की बैठक में उपस्थित सत्संगीबंधु श्री दिलीपभाई जोशी (जेठालाल) ने भी प्रमुखस्वामी महाराज के साथ अपने भावनात्मक अनुभव साझा किए। आशीर्वाद में, स्वामीजी ने प्रमुखस्वामी महाराज की महिमा की।

13-8-2022 अर्थात् तिथि के अनुसार ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज का छठा अन्तर्धान दिवस पर महंतस्वामी महाराज की पवित्र उपस्थिति में एक विशेष स्मृति सभा का आयोजन किया गया। 'महंतस्वामी रूपे आज मारो हाथ जाल्यो छे...' के केंद्रीय विचार के साथ

हुई बैठक में नि:स्वार्थ जीवन जीनेवाले आध्यात्मिक महापुरुष ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज और आज भी उन्हीं प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज की लोकोत्तर छवि विभिन्न मीडिया के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था।

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज और प्रकट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज के जीवन और व्यक्तित्व को व्याख्यान-वीडियो के माध्यम से चित्रित किया गया था, जो सद्गुरु ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रचित भक्तिपूर्ण संत परमहितकारी, जगतमांहि... की प्रत्येक पंक्ति को चित्रित करता है। जिसमें विवेकजीवनदास स्वामी ने हरिसम सब दुखहारी पर व्याख्यान दिया, यज्ञप्रियदास स्वामी ने त्रिगुणातीत फिरत तनु त्यागी पर व्याख्यान दिया और आत्मस्वरुपदास स्वामी ने प्रभुपद प्रगट करावत प्रीति पर व्याख्यान दिया। व्याख्यान के बाद इसी विषय पर एक वीडियो दिखाया गया। जिसमें हरिभक्त-गुणभावियों ने गुरुवर्य में अनुभव की गई उच्च आध्यात्मिक स्थिति और उनके जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया।

संत की सोबत, मिलत है प्रगट मुरारी... विषय पर वीडियो देखने के बाद इसी विषय पर पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने प्रमुखस्वामी महाराज की अपार महिमा का वर्णन किया और विशेष रूप से कहा कि पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज ने कृपा करके हमें पूज्य महंतस्वामी महाराज का उपहार दिया है। आदरणीय योगी बापा और आदरणीय प्रमुखस्वामी महाराज का महंतस्वामी महाराज के प्रति अद्वितीय प्रेम था। प्रमुखस्वामी महाराज के बाद अब हमें एक दिव्य संत का सुख पूज्य महंतस्वामी महाराज दे रहे हैं। हम अत्यंत भाग्यशाली हैं कि हमें निरंतर सत्पुरुष की उपस्थिति, दर्शन प्राप्त होते हैं।

ढाई महीने तक यहां हजारों भक्तों को लाभान्वित करने के लिए पूज्य महंतस्वामी महाराज का धन्यवाद करते हैं। हम सब उनके दर्शन के लिए आते हैं, लेकिन उनके दिल में एक भावना है कि मैं हरिभक्तों को देखना चाहता हूं! मुझे भक्तों को खुश करना है!

पूज्य महंतस्वामी महाराज ने हमें एक ही आह्वान किया है कि प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी पर्व की सेवा में सभी मंडी पड़ो का अर्थ है कि हम सभी को इस सेवा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है। और साथ ही पूज्य स्वामीजी ने हमें एक आदेश दिया कि दिव्यभाव सत्संग के भीतर तभी होगा जब सभी के प्रति दिव्यभाव होगा। मेरी यही प्रार्थना है कि स्वामीजी अपने इन शब्दों से हम पर कृपा करें।

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा कहे गए पूज्य महंतस्वामी महाराज की अतुलनीय महिमा उनके शांत और सौम्य स्वभाव में महसूस होती है। प्रमुखस्वामी महाराज का हम महंतस्वामी महाराज के रूप में स्वागत करते हैं - इस विश्वास के साथ संतों ने स्वामीजी का कलात्मक हारों से स्वागत किया।

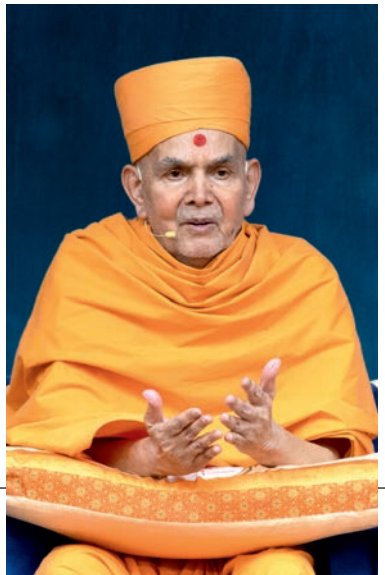

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव की पहल से, लोगों को उनकी पवित्र प्रेरणा मिले, शताब्दी महोत्सव की सभी गतिविधियों से दुनिया भर के लोग सूचित हों और सभी को उनके जीवन, कार्य, संदेश के बारे में विभिन्न माध्यमों से नियमित रूप से अवगत हो इस हेतु से बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्थान द्वारा सोशल मीडिया के विविध माध्यमों के द्वारा निर्मित रूप से वीडियो, स्टोरी, इमेज, न्यूज़ इत्यादि प्रकाशित होते रहेंगे। प्रकाशित होनेवाले इन नए आयामों का उद्घाटन स्वामीजी ने किया -

(1) psm100.org

(2) youtube.com/psm100yrs

(3) twitter.com/psm100yrs

(4) facebook.com/psm100yrs

(5) www.instagram.com/psm100yrs

इसके साथ ही प्रमुखस्वामी महाराज के चरणों में भाव वंदना के साथ अन्य प्रकाशनों का भी उद्घाटन किया गया: (1) प्रणमु प्रमुखस्वामी प्यारा (ऑडियो कीर्तन प्रकाशन) (2) जिनके गुण रीज़त गिरिधारी (हिंदी ऑडियोबुक)।

अंत में स्वामीजी ने कहा कि यह सब काम एक व्यक्ति द्वारा नहीं किया जाता है। हालाँकि, श्रीजी महाराज कर्ता हैं और सब कुछ वही करते हैं। अनेक भक्त-संत सभी मिलकर, एकता की भावना से, समरसता से कार्य करते हैं। सभी बड़े और छोटे शताब्दी उत्सव मनाने जा रहे हैं। सभी लोग बहुत खुश हैं। और क्यों नहीं? श्रीजी महाराज मिले हैं! और गुरुपरम्परा! जिनके जीवन में कोई दोष नहीं था। श्रीजीमहाराज, गुणातीतानंद स्वामी, परमहंसो - सभी ने इस तरह के एक एकता, संगठन की खेती की है। सभी को नमस्कार, जय

स्वामिनारायण।

आज के इस समारोह का सजीव प्रसारण के माध्यम से देश-विदेश के अनेक हरिभक्तों ने लाभ उठाया और गुरुभक्ति की पेशकश की।

■ रक्षाबंधन

11-8-2022, रक्षाबंधन। भारतीय संस्कृति के पवित्र अनुष्ठानों और व्रतों में रक्षाबंधन का महत्व अद्वितीय है। श्रावणी पूर्णिमा के इस शुभ दिन पर शाहीबाग में गुरुहरि महंतस्वामी महाराज की पावन निश्रा पर हजारों हरिभक्तों ने रक्षाबंधन पर्व का लाभ उठाया। ब्राह्मणों ने अनुष्ठान के अनुसार नए यज्ञोपवीत को अपनाया।

मंदिर को उत्सव के अनुसार सजाया गया था। ठाकोरजी का दर्शन करते हुए, आंगन में खड़े सभी को दर्शन देते हुए, जब स्वामीजी ने सुबह की पूजा में प्रवेश किया, तो उत्सव के अनुसार पृष्ठभूमि को सजाया गया। सत्संग दीक्षा ग्रंथ को सुरक्षा कवच के रूप में दिखाया गया था। पूजा में संतों ने भजन गाए। सभी बच्चों ने मोह से बचने के लिए विभिन्न प्रार्थनाएं कीं। पूजा के समानांतर, संतों ने रक्षा कवच सत्संग दीक्षा पर व्याख्यान दिए।

पूजा के बाद पर्व के अनुसार आत्मस्वरूपदास स्वामी ने सभी हरिभक्तों की ओर से स्वामीजी को राखी बांधी और आशीर्वाद प्राप्त किया। फिर सभी को रक्षा कवच की चाबी दिखाते हुए, स्वामीजी ने कहा कि जो भगवान को सर्वकर्ता मानता है, उसमें सारा ज्ञान आ गया है। भलभला ने इस समझ को एक विकट स्थिति में छोड़ दिया है, लेकिन अडिग रहनेवाले केवल वही लोग हैं जो भगवान के सच्चे भक्त थे। भगवान हमारी रक्षा तभी करें जब हृदय में ऐसा बीज बोया जाए कि भगवान सर्वशक्तिमान है। बीज छोटा है पर फल बड़ा! यदि कोई दृढ़ता से पुष्टि करता है कि भगवान श्रीजी महाराज सर्वोपरि, सर्वकर्ता हैं, तो वह विजयी हो गया है। लेकिन अगर तुम भगवान को एक तरफ छोड़ दो और सोचना शुरू कर दो, तो यह बेकार है। भगवान से प्रार्थना करते है कि जीवन में ऐसा क्षण न आए।

आशीर्वाद समाप्त होने के बाद बच्चों ने भक्ति नृत्य किया। बैठक की समाप्ति के बाद रक्षाबंधन की पूर्व संध्या पर स्वामीजी द्वारा अर्पित की गई राखियों को भक्तों की कलाइयों में बांधा गया और रक्षाबंधन सफल रहा।

12-8-2022 को शाम को एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बरसे अनराधार विषय के तहत अहमदाबाद के प्रांगण में ढाई महीने तक परम पूज्य महंतस्वामी महाराज द्वारा बरसाए गए सत्संगलाभ की दिव्य स्मृतियों को फिर से याद किया गया। दिव्य त्योहार-अवसरों को स्वामीजी ने अमृतवर्षा में कर्णावती शहर को सराबोर कर दिया, इस तरह विभिन्न माध्यमों से मनाये गये। इस उत्सव में हर कोई उन दिव्य स्मृतियों में खो गया।

पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी और पूज्य विवेकसागरदास स्वामी ने स्वामीजी को शुभ मंगलम के प्रतीक के रूप में कलश भेंट किया और उन्हें प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह में जल्दी आने के लिए आमंत्रित किया। तत्पश्चात् स्वामीजी के समक्ष शताब्दी महोत्सव के विभिन्न वर्गों का प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया। जिसे देख स्वामीजी ने प्रसन्नता व्यक्त की।

इस अवसर पर शाहीबाग स्थित बी.ए.पी.एस. मंदिर के कोठारी, पूज्य धर्मतिलक स्वामी ने अहमदाबाद के प्रांगण में सत्संग का लाभ देने के लिए सभी की ओर से स्वामीजी को धन्यवाद दिया। स्वामीजी ने सभी को आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार लगातार 76 दिनों तक सत्संग का दिव्य लाभ देकर अहमदाबाद से 15-8-2022 को स्वामीजी आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाने के बाद चरोतर के भक्तों को लाभ पहुँचाने के लिए आणंद के लिए रवाना हुए। शाहीबाग बी.ए.पी.एस. मंदिर में हजारों की संख्या में श्रद्धालु उमड़े और स्वामीजी को विदाई दी।

(ब्रह्मवत्सल स्वामी द्वारा एक लिखित रिपोर्ट से संकलित) ◆

महंतस्वामी महाराज से प्रेरित होकर बी.ए.पी.एस. संस्था द्वारा मनाया स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव

एक हजार से अधिक वर्षों के विदेशी शासन के बाद, भारतीय लोगों ने, अहिंसक आंदोलन के माध्यम से, अंतिम विदेशी शासकों – अंग्रेजों को विदाई दी, और स्वतंत्रता प्राप्त की, जो दुनिया में एक अनोखी घटना थी। भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता का सूर्योदय देखा और भारतीय स्वतंत्रता का तिरंगा ब्रिटिश ध्वज के स्थान पर लाल किले पर फहराया गया – 75 वर्ष पूरे होने पर स्वतंत्रता के इस अमृत महोत्सव पर, भारत सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी के नेतृत्व में विभिन्न देशभक्ति कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन्हीं में से एक है हर घर तिरंगा अभियान। इस अभियान में श्री प्रधानमंत्री ने देश के लोगों से अपने घरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने सभी से अनुरोध किया कि भारत की आजादी के लिए बलिदान देनेवाले वीर शहीदों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए तिरंगा फहराकर इस राष्ट्रीय दिवस को गर्व से मनाएं।

स्वतंत्रता के इस अमृत पर्व पर बी.ए.पी.एस. संगठन के अध्यक्ष परम पूज्य महंतस्वामी महाराज ने स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करनेवाले सभी लोगों को श्रद्धांजलि दी और सभी हरिभक्तों से हर घर तिरंगा अभियान में शामिल होने का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने दुनिया में भारत के गौरव में योगदान देनेवाले सभी लोगों, भारत सरकार और सभी देशवासियों को बधाई दी और उन्हें

स्वतंत्रता दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं दीं।

बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था के समन्वयक पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने एक विशेष संदेश देते हुए कहा कि स्वतंत्रता के अमृत का जश्न मनाते हुए, आइए हम उन सभी को याद करें जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है। उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए आइए हम सभी हर घर तिरंगा अभियान के तहत अपने घरों पर तिरंगा फहराएं। तिरंगा भारत की शान है। यह हमारी संस्कृति, हमारे रीति-रिवाजों, हमारे मूल्यों का प्रतीक है। तो आइए सरकारश्री के आदेश के अनुसार हम सभी अपने घरों में तिरंगा फहराएं और तिरंगे का सम्मान करें। और हम अपने दिलों में अमृत महोत्सव की भावना को मजबूत करें।

15 अगस्त बी.ए.पी.एस. 75वें स्वतंत्रता दिवस का भव्य समारोह अहमदाबाद के स्वामिनारायण मंदिर में परम पूज्य महंतस्वामी महाराज, संतों और भक्तों की उपस्थिति में आयोजित किया गया। केसरिया, सफेद और हरे रंग की टोपी में मौजूद श्रद्धालुओं ने मंदिर परिसर में तिरंगे की सुंदर आभा बिखेर दी। राष्ट्रीय ध्वज को विधिवत फहराने के बाद, स्वामीजी ने उपस्थित संतों और भक्तों के साथ ध्वज को सलामी दी। इस अवसर पर बोलते हुए परम पूज्य महंतस्वामी महाराज ने कहा कि इस शुभ दिन पर हमें आजादी मिली, इसके पीछे कई लोगों का बलिदान है। आज का दिन सभी को नमन करने का है। हम बस इतना कर सकते हैं कि उन्हें श्रद्धांजलि दें और उन्हें धन्यवाद दें। आइए इस शुभ दिन पर हम उन सभी को सलाम और धन्यवाद करते हैं जिन्होंने भारत के विकास में योगदान दिया है।

जब स्वतंत्रता संग्राम चल रहा था, महात्मा गांधीजी, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि पर हमारे गुरु शास्त्रीजी महाराज का बहुत आशीर्वाद था। जब शास्त्रीजी महाराज ने गांधीजी को नवागाम में आशीर्वाद दिया, तो उन्होंने योगीजी महाराज से स्वतंत्रता के लिए प्रतिदिन 25 जपमाला करने के लिए कहा। योगीजी महाराज ने नियमित रूप से उस आदेश का पालन किया। ऐसे महापुरुषों, अनेक ऋषि-मुनियों और सभी की मेहनत और आशीर्वाद से हमारा देश आगे बढ़ रहा है। वह कई गुना ज्यादा तरक्की करेगा और भविष्य में फिर से जगतगुरु बनेगा। भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, श्रीबुद्ध, श्रीमहावीर, भगवान श्रीस्वामिनारायण जैसे अवतारी पुरुष और प्रमुखस्वामी महाराज जैसे महान संतों ने इस धरती पर जन्म लिया है, इसलिए इस देश को उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

आइए, हम सभी अपनी आध्यात्मिक परंपरा को बनाए रखते हुए, दया और एकता के साथ अपने देश की सेवा करके अपने पूर्वजों को श्रद्धांजलि अर्पित करें। आज़ादी के अमृत महोत्सव की सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद, जय स्वामिनारायण।

आजादी के अमृत महोत्सव पर स्वामीजी की इन शुभ भावनाओं का सभी ने स्वागत किया।

गुरुहरि ने आदेश अनुसार दिल्ली और गांधीनगर में अक्षरधाम परिसरों सहित बी.ए.पी.एस. संगठन के अहमदाबाद, गोंडल, सारंगपुर, अटलादरा, गढड़ा आदि के हर शिखर मंदिर परिसर को राष्ट्रीय ध्वज और तिरंगे की रोशनी से सजाया

गया। 15 अगस्त को हर जगह स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। बी.ए.पी.एस. संस्था के सभी संतों और भक्तों ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर, राष्ट्रगान गाकर और राष्ट्र को श्रद्धांजलि देकर स्वतंत्रता के महान बलिदान में योगदान देनेवाले सभी लोगों को श्रद्धांजलि दी। सारंगपुर में 2075 फीट लंबी त्रिरंगा यात्रा का आयोजन कर अमृत पर्व विशेष रूप से मनाया गया।

स्वामीजी की प्रेरणा से राजधानी दिल्ली के विश्व प्रसिद्ध स्वामिनारायण अक्षरधाम मंदिर परिसर में सद्गुरुवर्य पूज्य डॉक्टर स्वामी की उपस्थिति में अमृत महोत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

आदरणीय डॉक्टर स्वामी ने दिल्ली के मध्य में स्थित भारतीय संस्कृति के प्रतीक समान अक्षरधाम परिसर में झंडा फहराया। उपस्थित संतों और भक्तों ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी और राष्ट्रगान गाया। जवानों ने परेड कर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। इस अवसर पर पूज्य मुनिवत्सलदास स्वामी ने भारत की भूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देनेवाले अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की और राष्ट्र के नैतिक उत्थान में अक्षरधाम के निर्माता परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा किए गए अभूतपूर्व योगदान को याद किया। आदरणीय डॉक्टर स्वामी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं को याद किया और एक समृद्ध और मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक प्रेम, सद्भावना और एकता के संदेश पर जोर दिया।

आजादी का अमृत महोत्सव गुजरात की राजधानी गांधीनगर के साथ-साथ स्वामिनारायण अक्षरधाम में भी मनाया गया। पूरे परिसर को राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे की रोशनी से सजाया गया। 14-8-2022 को संत, स्वयंसेवक एवं एस.आर.पी. के साथ पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने राष्ट्रीय ध्वज धारण करके स्वतंत्रता का संदेश दिया और अमृत महोत्सव की शुभ भावना व्यक्त की। इस मौके पर सभी ने तिरंगे के साथ शानदार पदयात्रा का आयोजन किया। यात्रा जब अक्षरधाम परिसर में रुकी तो पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर सभी का स्वागत किया। उसके बाद राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देकर भव्य तरीके से उत्सव मनाया गया।

ईश्वरचरणदास स्वामी ने उद्बोधन किया कि यह हमारा महान सौभाग्य है कि हम एक ही समय में स्वतंत्र भारत के 75 वर्ष और परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज की शताब्दी मना रहे हैं। यह महान विभूति भारत और संस्कृति के विकास में महान योगदान देकर लाखों भारतीयों का मार्गदर्शक भी बने। आओ, आज़ादी के अमृत महोत्सव और प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी महोत्सव से निरंतर प्रेरणा प्राप्त करें। ◆

प्रमुखस्वामी महाराज का सन्देश लेकर ऑस्ट्रेलिया के महासागर में समुद्र की सतह तक पहुंचे युवा

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के जरिए देश-विदेश में विभिन्न प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम ऑस्ट्रेलिया में संपन्न हुआ। ऑस्ट्रेलिया के प्रशांत महासागर में प्रसिद्ध ग्रेट बैरियर रीफ पर यह विशेष शताब्दी उत्सव 13 जुलाई 2022 को आयोजित किया गया।

गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन पर, प्रमुखस्वामी महाराज के प्रेम, शांति और सद्भाव के संदेश को लेकर प्रसिद्ध ग्रेट बैरियर रीफ में दुनिया के सबसे बड़े प्रशांत महासागर में युवा पहुंचे।

उत्सव की शुरुआत उपोलू रीफ के बीच में ओशन फ्रीडम बोट पर ठाकोरजी की पूजा के साथ हुई। इस अवसर पर ठाकोरजी के समक्ष पहले अन्नकूट अर्पित किया गया। तैराकों द्वारा श्रीअक्षरपुरुषोत्तम महाराज, प्रमुखस्वामी महाराज और महंतस्वामी महाराज की मूर्तियों को समुद्र की सतह में ले जाया गया।

यहां प्रार्थना की गई कि प्रेम, शांति और सद्भाव पूरी दुनिया में फैले। इस अवसर पर मनुष्य और प्रकृति के एक साथ फलने-फूलने की प्रतिबद्धता के संकेत के रूप में एकता माल्यार्पण भी किया गया।

इस अवसर पर महंतस्वामी महाराज ने सभी जीवों को आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार इस प्रमुखस्वामी महाराज को दी गई यह विशेष श्रद्धांजलि सभी के लिए यादगार बन रही।

उलुरु में शताब्दी समारोह

ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध प्राकृतिक स्थान उलुरु में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के अवसर पर उनके जीवन-संदेश को पुष्ट करने वाला एक कार्यक्रम 20 जुलाई 2022 को आयोजित किया गया। उलुरु यहां के मूलनिवासियों के लिए एक पवित्र स्थान है, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल भी है।

प्रमुखस्वामी महाराज की प्रतिमा को ले जाने के बाद संतों और भक्तों द्वारा यहां भजन कीर्तन किया गया। यहां रहनेवाले लोगों ने प्रमुखस्वामी महाराज की प्रतिमा की पूजा की और पारंपरिक नृत्य किया। उसके बाद श्रद्धालुओं ने चार किलोमीटर लंबी पैदल यात्रा की, जो माला कार पार्क से शुरू होकर कुनिया कार पार्क में रुकी। इस प्रकार, ऑस्ट्रेलिया में विशेष रूप से प्रमुखस्वामी महाराज को श्रद्धांजलि दी गई। ◆

बहरीन में आयोजित 'Freedom of Religion and Belief' सम्मेलन में बी.ए.पी.एस. संगठन का प्रतिनिधित्व

हाल ही में 1-6-2022 को बहरीन में यूरोपीय संघ-बहरीन द्वारा 'फ्रीडम ऑफ रिलिजियन एण्ड बिलीफ' पर एक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें बी.ए.पी.एस. संस्था को भी आमंत्रित किया गया था। इस सम्मेलन में यूरोपीय संघ के 27 देशों के प्रतिनिधि, जीसीसी (सऊदी अरब, बहरीन, कतर, ओमान, कुवैत, यूएई) देशों के प्रतिनिधि मौजूद थे। अनेक विद्वान भी उपस्थित थे।

इस सम्मेलन में बी.ए.पी.एस. संस्था की ओर से उपस्थित पूज्य ब्रह्मविहारीदास स्वामी ने धर्म, मानवता और सद्भाव के विचार पर गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिनिधियों को संबोधित किया। ब्रह्मविहारीदास स्वामी ने प्रमुखस्वामी महाराज का संदेश प्रस्तुत किया और विभिन्न धर्मों और धर्मों के बीच की असमानताओं को भी स्वीकार करने की बात कही। उन्होंने परम पूज्य प्रमुखस्वामी महाराज और परम पूज्य महंतस्वामी महाराज की ओर से दुनिया के धर्मों के बीच सद्भाव के लिए प्रार्थना की। बहरीन सोसायटी की चेयरपर्सन श्रीमती बेट्सी मैथिस और डॉ. शेख खालिद बिन खलीफा अल खलीफा ने ब्रह्मविहारीदास स्वामी के व्याख्यान की सराहना की।

इस अवसर पर किंग हमद ग्लोबल सेंटर फॉर पीसफुल को-एग्जिसटेंस के अध्यक्ष एवं महासचिव ने संतों एवं बी.ए.पी.एस. प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया, जिसमें डॉ. प्रफुल्लभाई वैद्य, श्री रमेशभाई पाटीदार और समुदाय के नेता उपस्थित थे। ◆

पांच महाद्वीपों में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण रिसर्च इंस्टिट्यूट का प्रारंभ...

परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में आदेश दिया है कि प्रवर्तनीया सद्विद्या इसका अर्थ है सद्विद्या का प्रवर्तन करना। अपने शाश्वत जनादेश के अनुसार, बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था पिछले एक शताब्दी से सद्विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत है।

प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज ने प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव के जरिए पृथ्वी के सभी पांच महाद्वीपों में शैक्षणिक गतिविधियों के लिए बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना कर उसी परंपरा को आगे बढ़ाया। इस अनुसंधान संस्थान में भारतीय संस्कृति, सनातन धर्म और स्वामिनारायणीय उपासना पूजा की वैदिक परंपरा पर अकादमिक शोध से लेकर भविष्य में समाज कल्याण के विभिन्न विषयों पर विद्वान काम करेंगे।

यूके और यूरोप के लंदन में, उत्तरी अमेरिका के टोरंटो (कैनेडा) और रॉबिंसविले (न्यू जर्सी, यूएसए) में, ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में और अफ्रीका के नैरोबी (केन्या) में इस शोध संस्थान को शुरू करके महंतस्वामी महाराज ने संस्कृति को बढ़ावा दिया है। पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी के मार्गदर्शन में परम पूज्य महंतस्वामी महाराज के आशीर्वाद से स्थापित ये संस्थान आनेवाले समय में भी अनेक स्तरों पर कार्य करते हुए सभी को उज्ज्वल प्रेरणा देते रहेंगे। सभी को विश्वास है कि विद्वान सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति और वैश्विक मूल्यों के कई पहलुओं पर शोध करके इन संस्थानों के माध्यम से समाज को मीठे फल देंगे। ◆

सारंगपुर में प्राकृतिक खेती जागरूकता सम्मेलन...

भारत की आजादी के अमृत महोत्सव और ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की जन्म शताब्दी के अवसर पर, तीर्थधाम सारंगपुर में बी.ए.पी.एस. किसानों को जैविक खेती के बारे में शिक्षित करने के लिए स्वामिनारायण मंदिर परिसर में एक सुंदर सम्मेलन आयोजित किया गया। 15 जून 2022 को आयोजित इस अधिवेशन में गुजरात के महामहिम राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी आदि गणमान्य व्यक्तियों सहित 1700 से अधिक किसान उपस्थित थे।

राज्यपाल ने सबसे पहले बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण विद्यामंदिर, यज्ञपुरुष वाडी और यज्ञपुरुष गौशाला का दौरा किया। यहां की व्यवस्था देखकर वे हर्षित हुए। मंदिर में ठाकोरजी के दर्शन करने के बाद, वे स्थानीय किसानों द्वारा उत्पादित प्राकृतिक कृषि उत्पादों की प्रदर्शनी देखने गए। फिर यज्ञपुरुष सभा भवन में आयोजित समारोह में पहुंचे। दीप प्रज्वलित करने के बाद ज्ञानेश्वरदास स्वामी ने सभा को संबोधित किया और पूज्य महंतस्वामी महाराज का आशीर्वाद पत्र पढ़ा। बाद में, राज्यपाल ने प्राकृतिक कृषि तकनीकों के उपयोग के लाभों और कीटनाशकों और उर्वरकों जैसे रसायनों के उपयोग के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए एक संवादात्मक, आकर्षक और प्रेरक भाषण दिया।

अंत में, उन्होंने किसानों से प्राकृतिक खेती की तकनीकों को अपनाने का आग्रह किया। ◆

तीर्थधाम सारंगपुर में 'कारिका-जयी' बच्चों के लिए 'प्रमुखसंस्कृतम्' पाठ्यक्रम का शुभारंभ

सारे विश्व में कई स्तरों पर ब्रह्मस्वरूप महंतस्वामी महाराज ने ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव की भव्य तरीके से घोषणा की है, उसमें बालक-बालिकाओं का भी विशेष योगदान प्राप्त हो रहा है। शताब्दी उत्सव के अवसर पर ऐसा ही एक अनूठा कदम बच्चों के लिए एक नए संस्कृत पाठ्यक्रम का शुभारंभ है। बच्चों के लिए यह विशेष संस्कृत अध्ययन 'कारिका-जयी' द्वारा शुरू किया गया है, जिन्होंने परम पूज्य महंतस्वामी महाराज द्वारा लिखित सत्संगदीक्षा शास्त्र के 315 श्लोकों के अलावा स्वामिनारायण सिद्धांत सुधा के 565 कारिकाओं को याद किया है।

2 जून से 9 जून तक, पूज्य त्यागवल्लभदास स्वामी की उपस्थिति में पूरे विश्व से चुने गए 116 'कारिका-जयी' बच्चों के लिए सारंगपुर में 'प्रमुख संस्कृतम्' विद्यारंभ समारोह आयोजित किया गया था। बालक-बालिकाओं ने श्लोकों और कारिकाओं को हृदय से कंठस्थ किया और स्वामीजी की अनुपम प्रसन्नता प्राप्त की। इन सभी बच्चों के माता-पिता ने एक स्वर में कहा कि इसकी व्याख्या और सार हृदय में अंकित हो ताकि यह श्लोक आजीवन याद रहे। यह ऑनलाइन पाठ्यक्रम इसलिए शुरू किया गया है क्योंकि इन छंदों की समझ विकसित करने के लिए बच्चों को संस्कृत का भाषाज्ञान, लेखन, पठन कौशल सिखाना आवश्यक समझा गया है।

परम आदरणीय महंतस्वामी महाराज 7-6-2022 को सुबह 9 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए इसमें शामिल हुए। उन्होंने दीप प्रज्वलित कर इस नए पाठ्यक्रम की शुरुआत की। चूंकि यह विद्यारंभ सत्र का छठा दिन था, बच्चों ने प्रस्तुत किया हमने क्या सीखा? इन चमकते सितारों को आशीर्वाद देते हुए, स्वामीजी ने कहा कि 'यदि आप सभी इस तरह से पढ़ते रहेंगे, तो आप महान ज्ञानी विद्वान बनेंगे। लेकिन अगर आप बीच में ही पढ़ाई छोड़ देंगे तो आप जैसे हैं वैसे ही रहेंगे। तो पढ़ते रहो, तुम्हारी बुद्धि इस हद तक खिल उठेगी कि हृदय में प्रकाश होगा, जगत माया निकल जाएगी।'

इन 8 से 14 वर्ष के बच्चों में 32 बच्चे विदेश से हैं। इन मेधावी बच्चों को प्रतिदिन एक घंटा संस्कृत भाषा का अध्ययन कराकर विद्वान भावी पंडितों की नई पीढ़ी तैयार करने में अपना योगदान देंगे। ◆

अहमदाबाद में आयोजित चिकित्सा कार्यकर्ता शिविर-2022

समाज के महत्वपूर्ण घटकों के रूप में डॉक्टरों द्वारा समाजसेवा कार्य को और अधिक ठोस बनाने के लिए चिकित्सा सेवाओं के साथ आध्यात्मिकता को जोड़ने के लिए बी.ए.पी.एस. संगठन विभिन्न स्तरों पर वर्षों से प्रयास कर रहा है। मेडिको-आध्यात्मिक सम्मेलनों के अलावा, बी.ए.पी.एस. संस्थान की ओर से कैंपस सभा का आयोजन किया जा रहा है। चिकित्सा क्षेत्र में अध्ययनरत हजारों छात्र इस बैठक के माध्यम से शिक्षा, संस्कार और सत्संग के मूल्यों को मजबूत कर रहे हैं। 7-8-2022 को अहमदाबाद में इन परिसरों की सभाओं में 100 से अधिक कार्यकर्ताओं का एक दिवसीय शिविर वन स्टेप अहेड के विचार के साथ आयोजित किया गया था।

शिविर में परम पूज्य महंतस्वामी महाराज के दर्शन-आशीर्वाद के अतिरिक्त पूज्य विवेकसागरदास स्वामी, नारायणमुनिदास स्वामी, यज्ञप्रियदास स्वामी आदि ने प्रेरक व्याख्यानों का लाभ दिया। इसके अलावा इन कार्यकर्ताओं को सत्संग विकास का विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया। इसके पीछे शताब्दी उत्सव एक प्रेरक घटना थी। ◆

ब्राजील में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संतों का सत्संग विचरण...

हाल ही में परम पूज्य महंतस्वामी महाराज की प्रेरणा से दक्षिण अमेरिका में ब्राजील में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्थान यूएसए के संतों की यात्रा हुई। ब्राजील लैटिन अमेरिका में सबसे बड़ा देश है। यहां की आबादी 20 करोड़ है। यहां ज्यादातर लोग पुर्तगाली बोलते हैं। 2019 में भी पूज्य संत यहां पहुंचे। इस वर्ष फिर से 12 से 17 अप्रैल 2022 के दौरान पूज्य प्रियसेवादास स्वामी और उत्तमश्लोकदास स्वामी ने सत्संग विचरण किया। यहां रहनेवाले हिंदुओं की आस्था को मजबूत करने के लिए यह सत्संगयात्रा थी। योगानुयोग भारत की स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर, साओ पाउलो में भारत के महावाणिज्य दूत श्री सुरेश रेड्डी ने 13 अप्रैल, 2022 को एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर दूतावास के सदस्य और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत संतों ने वैदिक शांतिपाठ से की। बाद में पूज्य प्रियसेवादास स्वामी ने सहिष्णुता और सद्भाव के विषय पर उपदेश दिया। अंत में वैष्णवजन.. का गान कर समारोह का समापन किया गया।

16 अप्रैल को शिव मंदिर में आध्यात्मिक उत्थान और पारिवारिक शांति विषय पर एक पारिवारिक शिविर का आयोजन किया गया। संतों ने 17 अप्रैल रामनवमी को एक विशेष सभा में भगवान श्रीराम की महिमा गाई। इसके साथ ही भगवान श्रीस्वामिनारायण के जीवन और कार्य का भी परिचय दिया गया। साओ पाउलो में आदरणीय संतों ने विभिन्न स्थानों का दौरा किया। संतों की इस सत्संगयात्रा से यहां रहनेवाले हिंदू समाज के लोगों में आस्था का दीप विशेष रूप से प्रज्ज्वलित हुआ। ◆

बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण संस्था के विभिन्न केन्द्रों में लोकसेवा और आध्यात्मिक कार्यक्रमों के वृत्तान्त

मुख्यमंत्री ने व्यारा मंदिर के दर्शन किए

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल 4-8-2022 को व्यारा, दक्षिण गुजरात में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण मंदिर दर्शनार्थ पधारे। पिछले 60 वर्षों से दक्षिण गुजरात में बी.ए.पी.एस. द्वारा संचालित आदिवासी उत्थान, मोबाइल अस्पतालों, मुफ्त सेवाकार्यों आदि की गतिविधियों की जानकारी पाकर वे विशेषरूप से प्रभावित हुए। मुख्यमंत्री ने प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी की पहल के रूप में हाल ही में आयोजित पारिवारिक शांति अभियान और व्यासमुक्ति अभियान का विवरण प्राप्त करने के बाद संगठन के सामाजिक उत्थान कार्यों की भूरि भूरि सराहना की। ◆

तंजानिया में इंटरफेथ संगोष्ठी

25 जून 2022 को पूर्वी अफ्रीकी देश तंजानिया के म्वांजा शहर में, तंजानिया के सेंट ऑगस्टीन विश्वविद्यालय (एसएयूटी) विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों के साथ एक इंटरफेथ सेमिनार के लिए, बी.ए.पी.एस. संस्था को आमंत्रित किया गया था। इस संगोष्ठी में बी.ए.पी.एस. संस्था की ओर से दीपेश कुमार गिरीशचंद्र दवे ने युवाओं को समाज की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए मार्गदर्शन किया।

इस कार्यक्रम में कुलपति प्रो. और 1,500 से अधिक नागरिकों ने भाग लिया, जिसमें कोस्टा रिकान महलू और विभिन्न धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे। ◆

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी पहल साइकिल यात्रा

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज जब छात्र थे तब पढ़ाई के उद्देश्य से चाणसद से पादरा तक साइकिल चलाते थे। उनकी याद में और स्वस्थ जीवन शैली के लिए नागरिकों को प्रेरित करने के महान उद्देश्य के साथ, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में सत्संग केंद्रों द्वारा एक विशेष यात्रा का आयोजन किया गया कि पी.एस.एम. - 100 साइकिल चुनौती। मई में ऑस्ट्रेलिया के 24 सत्संग केंद्रों में आयोजित यात्रा में 900 से अधिक युवा और वृद्ध भक्तों ने भाग लिया और गुरुहरि के जाप के साथ कुल 10,000 किमी की दूरी तय की। प्रतिकूल मौसम के बावजूद सभी ने इस तरह प्रमुखस्वामी महाराज को श्रद्धांजलि दी। ◆

गुजरात के 18 विश्वविद्यालयों में अकादमिक सेमिनारों के माध्यम से ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज को नमन...

विश्ववंदनीय संतविभूति ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी समारोह के अवसर पर, दुनिया भर में कार्यक्रमों की एक शृंखला आयोजित की जा रही है, जिसमें विभिन्न दृष्टिकोणों से उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की सराहना की जा रही है और उनके दिव्य जीवन कार्यों को श्रद्धांजलि दी जा रही है। इसके तहत हाल ही में आर्ष शोध संस्थान केंद्र, गांधीनगर और गुजरात के 18 विभिन्न विश्वविद्यालयों की संयुक्त पहल के तहत सेमिनार आयोजित किए गए।

गौरतलब है कि इन सभी विश्वविद्यालयों में प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन-कार्य-संदेश की आलोचना करनेवाले विभिन्न विषयों को प्रत्येक संगोष्ठी के केंद्रीय विषय के रूप में चुना गया था।

प्रत्येक विश्वविद्यालय सभागार में मंगल प्रार्थनागान के साथ संगोष्ठी की शुरुआत की गई। तत्पश्चात् विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलसचिव, शिक्षाविद, वक्ता एवं आर्ष शोध संस्थान गांधीनगर के पूज्य श्रुतिप्रकाशदास स्वामी ने दीप प्रज्वलित कर औपचारिक रूप से संगोष्ठी का उद्घाटन किया। तत्पश्चात् ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा मध्यवर्ती विचार की खोज में की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों को वीडियो के माध्यम से किया गया। संगोष्ठी के मुख्य वक्ताओं ने ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज की नि:स्वार्थ सेवा केंद्रीय विचार पर केन्द्रित प्रेरक भाषण दिए और उनके अद्वितीय योगदान की सराहना की। अंत में संगोष्ठी में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने भी पुष्पांजलि के माध्यम से प्रमुखस्वामी महाराज द्वारा की गई अद्वितीय सेवा को श्रद्धांजलि दी। आर्ष शोध संस्थान, गांधीनगर और विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ये 18 सेमिनार विश्वविद्यालय की वेबसाइट और बी.ए.पी.एस. की प्रेरणासेतु एप्लिकेशन पर उपलब्ध हैं। इसका सीधा प्रसारण संगठन के प्रेरणा सेतु एप से किया गया। हजारों छात्र और भाविक-भक्तों ने घर बैठे इस संगोष्ठी से लाभ उठाया और प्रमुखस्वामी महाराज के जीवन-कार्य और संदेश को दिल से ग्रहण किया।

इन संगोष्ठियों के माध्यम से ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के दिव्य व्यक्तित्व की पवित्र सुगंध और उनके लोक कल्याणकारी कार्यों ने गुजरात के उच्च शिक्षा जगत में प्रसार किया। ◆

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव की पूर्णाहुति 15 जनवरी को...

ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी पर्व का उत्साह देश-विदेश में हर जगह देखा जा रहा है। इस भव्य और अद्वितीय उत्सव के लिए हजारों स्वयंसेवकों-संतों की सेवा द्वारा 600 एकड़ भूमि में एक अभूतपूर्व प्रमुखस्वामी महाराज नगर का निर्माण किया जा रहा है। इस पर्व के वैश्विक उत्सव से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें, इसके लिए देश-विदेश के भक्तों की भावनाओं और प्रार्थनाओं को ध्यान में रखते हुए, त्योहार को 13 जनवरी को पूरा करने के बजाए दो और दिनों के लिए बढ़ा दिया गया है। परम पूज्य महंतस्वामी महाराज के आदेश से 15 दिसंबर 2022 से 15 जनवरी 2023 तक हर कोई इस त्योहार का आनंद ले सकता है। इस उत्सव का चरमोत्कर्ष था प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी वंदना का अंतिम कार्यक्रम, महोत्सव का समापन 15 जनवरी की रात को होगा। देश-विदेश के सभी भक्तों से अनुरोध है कि इस पर ध्यान दें।

- साधु ईश्वरचरणदास के जय स्वामिनारायण

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव की एक विशेष स्मृति प्राप्त करने का अवसर है

आइए, श्री स्वामिनारायण विश्वशांति यज्ञ में जुड़े

अहमदाबाद के प्रमुखस्वामी महाराज नगर में ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के शताब्दी उत्सव के दौरान स्थायी यज्ञशाला का आयोजन किया गया है। इस यज्ञशाला में लगातार एक माह तक स्वामिनारायण विश्वशांति यज्ञ के माध्यम से भगवान श्रीस्वामिनारायण, महान संतों और ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज के चरणों में भाव-अर्घ्य दिया जाएगा।

यह महायज्ञ मगसिर वदी अष्टमी, 16-12-2022, शुक्रवार से शुरू होकर 14-1-2023 शनिवार को पूरा होगा। चार सत्रों में प्रतिदिन केवल 15-15 मेजबान जोड़े (कुल 60 हरिभक्त जोड़े) इस यज्ञ की मेजबान स्थिति का लाभ उठा सकेंगे। इस यज्ञ में यजमान के रूप में शामिल होकर आप अपने या अपने परिवार के सदस्यों के जन्मदिन, शादी की सालगिरह, माता-पिता या रिश्तेदारों की पुण्यतिथि आदि को ध्यान में रखते हुए शताब्दी महोत्सव की यादगार यादें बना सकेंगे। नवविवाहित वर-वधू भी इस यज्ञ का लाभ उठाकर वैवाहिक जीवन के शुभ अवसर का आनंद उठा सकते हैं। आप अपनी इच्छा के अनुसार तिथि या तारीख चुनकर संतों का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए इस दुर्लभ यज्ञ में शामिल हो सकते हैं। प्रत्येक यजमान को पूर्ण सोलह उपचारवाली स्वामिनारायण महापूजा, सहजानंद नामावली और सत्संग दीक्षा होम आदि से लाभ होगा और विभिन्न पूजा सामग्री के उपहार प्राप्त होंगे।

- **विशिष्ट विवरण और सुविधा की जानकारी के लिए वेबसाइट देखें -**
  https://yagna.psm100.org/
- **यजमान के रूप में फॉर्म भरने के लिए ई-मेल पता:**
  Yagna.mahotsav@in.baps.org
- **फोन-सम्पर्क :** WhatsApp & Mobile : +91–9998993221
  यज्ञ विभाग, प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव, प्रमुखस्वामी महाराज नगर, अहमदाबाद.

सभी पांच महाद्वीपों में बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण अनुसंधान संस्थानों की स्थापना

ब्रह्मस्वरूप प्रमुचस्वामी महाराज के शताब्दी उत्सव के अवसर पर देश-विदेश में विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। ऐसा ही एक रचनात्मक कार्यक्रम बी.ए.पी.एस. स्वामिनारायण अनुसंधान संस्थान प्रगट ब्रह्मस्वरूप गुरुहरि महंतस्वामी महाराज की प्रेरणा से सभी पांच महाद्वीपों में स्थापित किया गया। परम पूज्य महंतस्वामी महाराज की आभासी उपस्थिति में यूके और यूरोप में लंदन में इस शोध संस्थान की स्थापना (छवि 1, 2), टोरंटो (कनाडा) और रॉबिंसविले (न्यूजर्सी, यूएसए) अमेरिका में (छवि 3, 4), सिडनी ऑस्ट्रेलिया में समारोह में उस महाद्वीप के प्रख्यात विद्वान और बी.ए.पी.एस. संस्था के विद्वान संत पूज्य भद्रेशदास स्वामी उपस्थित थे। इन अनुसंधान केंद्रों की स्थापना की यादें जहां भविष्य में विद्वानों द्वारा सनातन धर्म, आध्यात्मिकता, संस्कृति और सद्भाव के क्षेत्र में कई शोध किए जाएंगे... (छवि 5)

Swaminarayan Prakash Hindi, September-2022, Published on 10-09-2022, Posted at Ahmedabad, P.S.O. 10th on Every Month.
Regd No. GAMC-719/2021-2023, Valid up to 31-12-2023. RNI No. 43538/85.
Licensed to Post Without Perpayment No. PMG/NG/029/2021-2023, Valid up to 31-12-2023.

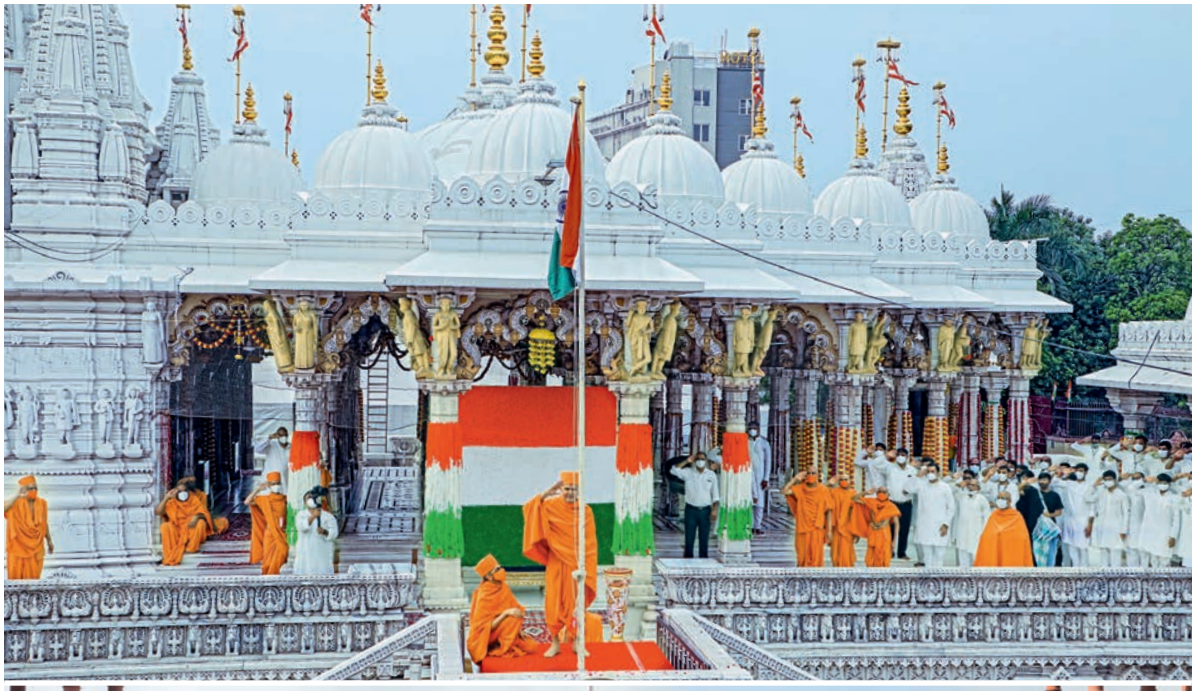

महंतस्वामी महाराज से प्रेरित होकर बी.ए.पी.एस. संगठन द्वारा हर जगह मनाया गया आजादी का अमृत महोत्सव

परम पूज्य महंतस्वामी महाराज की प्रेरणा से अक्षरधाम सहित लाखों श्रद्धालु और बी.ए.पी.एस. संगठन के कई मंदिरों ने घर-घर तिरंगा फहराया और आजादी का अमृत महोत्सव मनाया। परम पूज्य महंतस्वामी महाराज, पूज्य ईश्वरचरणदास स्वामी, पूज्य डाक्टर स्वामी की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए क्रमशः अहमदाबाद, गांधीनगर और दिल्ली में ध्वजारोहण की विशेष स्मृतियाँ...

Printed and Published by Sadhu Swayamprakashdas on behalf of Swaminarayan Aksharpith and Printed at Swaminarayan Mudran Mandir, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004 and Published from Swaminarayan Aksharpith, Shahibaug Road, Ahmedabad - 380 004. Editor - Sadhu Swayamprakashdas